



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुख्यपत्र

terapanthtimes.org



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 17-01-2026 • पेज 16 | ₹ 10 रुपये

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 16 • 19 जनवरी - 25 जनवरी 2026

पुण्य

पुन्य सहजे हुये निरजरा कीयां।
ज्यूं खाखले हुये मोहां रे साथ॥

आत्म-शुद्धि (निर्जरा) के साथ
पुण्य सजह होता है। जैसे-गेहूं
के साथ-भूसा।

- आचार्यश्री भिक्षु

162वाँ मर्यादा महोत्सव छोटी खाटू

”

गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर,
समर्पण का करें विकास।
दूर हो जाएगा तिमिर जग से,
होगा सर्वत्र प्रकाश॥
मर्यादा और अनुशासन है,
प्राणतत्त्व तेरापंथ के।
अपनाए जीवन में इनको,
छा जाएगा सर्वत्र उल्लास॥



॥ 162वें मर्यादा महोत्सव पर नेमानंदन को शत शत अभिनंदन ॥

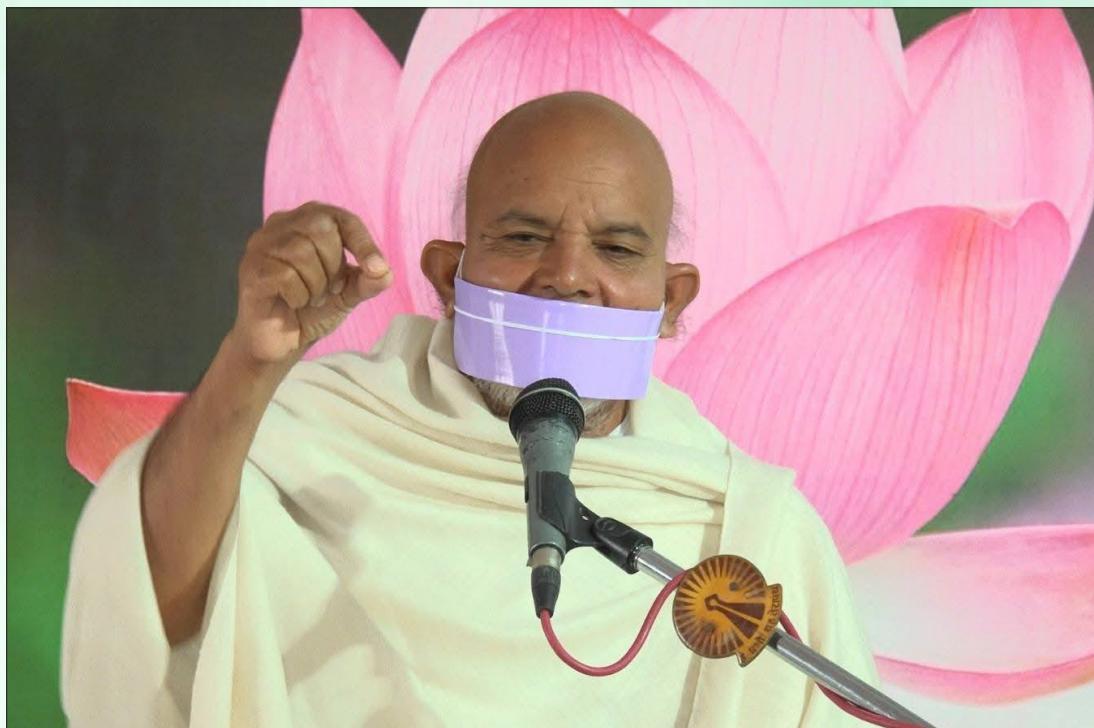
करणीय और अकरणीय कार्यों का विवेक व्यक्ति में रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

रूपनगढ़।

11 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी ध्वल सेना के साथ प्रातःकाला की कड़कड़ाती सदी में ग्राम रलावता से मंगल प्रस्थान किया और लगभग 13 किमी का विहार सुसंपन्न कर रूपनगढ़ स्थित स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय में पधारे।

महाविद्यालय परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में पावन पाथेय प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि इस संसार में जन्म मरण की परंपरा चलती है। प्राणी जन्म लेता है, जीवन जीता है, और एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। इस जन्म मरण वाले संसार में कोई नरक गति, तिर्यंच गति, निगोद, आदि दुर्गतियों में जाता है, इन दुर्गतियों में जाना न हो ऐसा व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए और आखिर में मोक्ष भी प्राप्त हो



सके। जीवन का परम लक्ष्य यही होना चाहिए कि मोक्ष की प्राप्ति हो जाए। पूर्व कर्मों का क्षय हो जाए और पूर्णतया जाना न हो ऐसा व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए और आखिर में मोक्ष भी प्राप्त हो

संसारी जीवों का जीवन नश्वर होता है और एक दिन समाप्त होने वाला होता है। इन प्राणियों में मनुष्य का कर्म मुक्ति की अवस्था प्राप्त हो जाए। पांच इन्द्रियों व मन वाला जीवन है

और यह ऐसा जीवन है जहां से साधना करके मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए व्यक्ति को करणीय और अकरणीय कार्यों का विवेक होना चाहिए। इस जन्म में धन, मकान,

आदि की अनुकूलताएं पूर्वजित पुण्य से प्राप्त हुई हैं परन्तु यह खजाना तो एक दिन खाली हो जाए। अतः व्यक्ति यह चिंतन करे कि मैं आगे के लिए क्या कर रहा हूं? मैं धर्म का जीवन जी रहा हूं या नहीं, जीवन में संयम, अहिंसा, ईमानदारी, नैतिकता है या नहीं? यदि जीवन अच्छा है पवित्र है और साथ में संयम और तप भी है तो आशा करनी चाहिए कि आगे भी अच्छी स्थिति प्राप्त हो सकेगी। व्यक्ति को झूठ-कपट और चोरी से बचना चाहिए और जीवन में ईमानदारी रखनी चाहिए। अतः यदि हमारे जीवन में त्याग, तपस्या साधना आदि रहेगी तो हमारा वर्तमान जीवन भी अच्छा रहेगा तथा आगे का जीवन भी अच्छा रह सकेगा।

रूपनगढ़ की ओर से संजय जैन, स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय के डायरेक्टर बी. एल. देवानंद तथा प्रिंसीपल राजू वासानी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कर्म कर्ता का ही अनुगमन करता है : आचार्यश्री महाश्रमण

परबतसर गांव।

12 जनवरी 2026

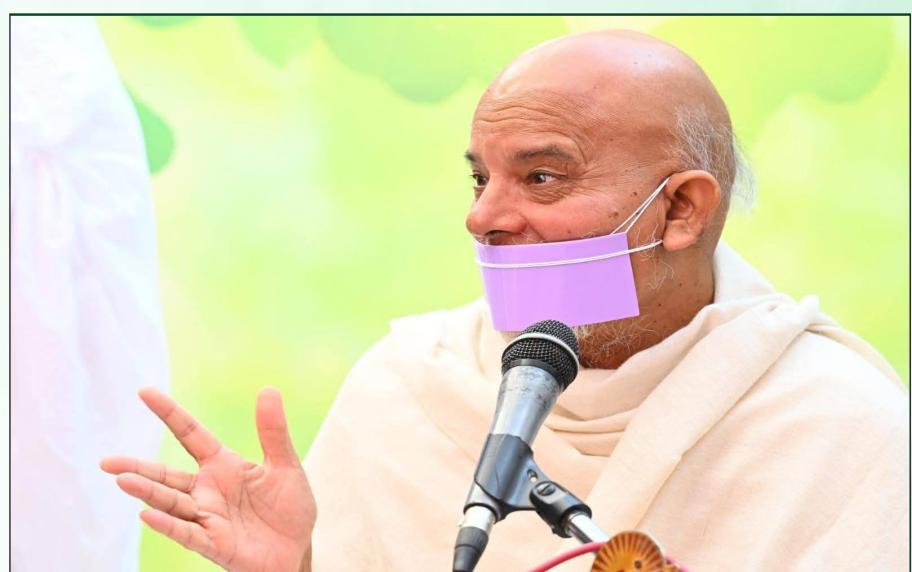
जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, अखण्ड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातःकाल रूपनगढ़ गांव, जिला अजमेर से गतिमान हुए और अपनी ध्वल सेना के साथ डीडवाना-कुचामन जिले के परबतसर गांव स्थित सीमा मेमोरियल शिक्षण संस्थान में लगभग 11 किमी का विहार कर पधारे।

शिक्षण संस्थान में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित श्रद्धालुओं को आहंत् वाग्मय के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि हमारी दुनिया में दो तत्त्व हैं - चेतन और अचेतन। हमारे जीवन में भी दो तत्त्व हैं - आत्मा और शरीर। आत्मा अपने आप में ज्ञानमय और चैतन्यमय है, परन्तु शरीर अपने आप में अचेतन है। आत्मा शाश्वत है तो शरीर अशाश्वत है। आत्मा अच्छेद्य है, अभेद्य है, अदाह्य है। आत्मा पुनर्जन्म भी लेत है और यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त न हो जाए।

कई आत्माएं ऐसी भी हैं जो कभी भी मोक्ष को प्राप्त नहीं होगी। कई आत्माएं निर्मल व विशुद्ध बनकर परमात्म स्थान को प्राप्त कर लेती हैं।

वर्तमान में हम जो मनुष्य रूप में आत्माएं हैं, उनके कर्म लगे होने के कारण शुद्ध आत्माएं नहीं हैं और जन्म-मरण का क्रम भी चल रहा है। आत्मा अकेली कर्म का बंध करती है और अकेली ही कर्मों का फल भोगती है। व्यक्ति को पाप के कारण दुःख मिलते हैं और पुण्य के कारण भौतिक सुखों की प्राप्ति भी हो सकती है। जब व्यक्ति के पाप कर्म उदय में आते हैं तो खुद का दुःख, खुद को ही भोगना होता है। कोई भी उस कष्ट को बंटा नहीं सकता। जो कर्म किए हैं, वे अपने कर्ता का अनुगमन करते हैं, कर्म करने वाले को ही कर्म अपना फल देते हैं। इसलिए आत्मा अकेली है, अकेला जन्म लेता है, अकेला मृत्यु को प्राप्त होता है, अकेला कर्मों का बंध करता है, और खुद को ही कर्म भोगने पड़ते हैं। इसलिए व्यक्ति यह सोचे कि मेरे कर्म जब मुझे भोगने हैं तो जितना हो सके मैं पापों से बचने का प्रयास करूं।

जैन धर्म में प्राणातिपात, मृषावाद, आदि अठारह पाप बताए गए हैं, इन्हें करने वाला जीव पाप का बंधन करता है। व्यक्ति यह प्रयास करे कि जानबूझ कर किसी भी प्राणी को मेरे द्वारा दुःख न पहुंचे।



जानबूझकर किसी भी प्राणी की हिंसा से बचने का प्रयास करे। किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाएं, चोरी जैसा काम न करे। जहां तक संभव हो सके इन पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। इस प्रकार पापों से बचने और धर्म के पथ पर चलने से आत्मा एक दिन विशुद्धता को प्राप्त हो सकती है।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त

स्थानीय विधायक रामनिवास गावड़िया ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सीमा मेमोरियल शिक्षण संस्थान के चेयरमैन डॉ. भजनलाल, सीमाशास्त्री कॉलेज की ओर से देवाराम, सिंघवी परिवार की ओर से भूपेन्द्र सिंघवी, सुभाष पारख व नगरपालिका चेयरमैन ओमप्रकाश ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल-बोरावड़ ने स्वागत गीत का संगान किया।



मानव जीवन का सार है धर्म की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

किशनगढ़।

09 जनवरी 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धबल सेना के साथ आज प्रातः गगवाना से विहार किया और किशनगढ़ नगरी में पधारे। श्रद्धालुओं ने बुलंद जयघोष से पूज्य प्रवर का हार्दिक स्वागत किया। भव्य स्वागत जुलूस में समस्त जाति धर्म के लोग सम्मिलित थे। आर. के. मार्बल गुप्त के चेयरमेन पाठनी जी भी पूज्य प्रवर के स्वागत में उपस्थित थे। आचार्य प्रवर भव्य जुलूस के साथ किशनगढ़ के आर. के. कम्प्यूनिटी सेंटर में पधारे।

'जय समवसरण' में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी सृष्टि में नित्यता और अनित्यता दोनों स्थितियां हैं। दुनियां में नित्य चीजें भी हैं जो स्थायी हैं जैसे - आत्मा। आत्मा एक स्थायी तत्त्व है, जिसे कोई मार नहीं सकता, काट नहीं सकता, यह आत्मा की नित्यता की स्थिति मानी जा सकती है। इसी प्रकार आकाश भी स्थायी है। नित्यता के साथ ही परिवर्तनशीलता भी रहती है। आत्मा कभी मनुष्य, कभी देव, पशु, नारक के रूप जन्म ले लेती है और कभी मोक्ष में



चली जाती है। हमारी आत्मा नित्य है परन्तु यह शरीर अनित्य है। इसलिए हम शरीर को नश्वर कह सकते हैं, जबकि आत्मा अविनश्वर है, शाश्वत है।

हमारी आत्मा की यह बहुत महत्वपूर्ण स्थिति है कि हमें मानव देह प्राप्त है। इस मानव देह द्वारा साधना करके आत्मा परमात्म पद को प्राप्त कर सकती है, अन्य किसी भी योनि से आत्मा मोक्ष और परमात्म पद को प्राप्त नहीं कर सकती। प्रश्न होता है कि जीवन क्यों जीना चाहिए, जीवन जीने का लक्ष्य क्या है? जीवन का एक उद्देश्य होना चाहिए। एक अच्छा उद्देश्य जीवन जीने का हो तो जीवन जीने की बड़ी सार्थकता हो सकती है। शास्त्र में कहा गया कि हमारे द्वारा

जो पूर्व कर्म किए हुए हैं, उन कर्मों का क्षय करने के लिए, आत्मा को विशुद्ध बनाने के लिए यह शरीर धारण करना चाहिए, जीवन जीना चाहिए। चेतना को निर्मल बनाकर मोक्ष प्राप्त कर लेना बहुत बड़ा कर्तव्य होता है। धर्म की साधना का सबसे बड़ा लक्ष्य यही होता है कि अपनी आत्मा को पूर्वकृत कर्मों से मुक्त बना लेना और मोक्ष प्राप्त कर लेना। तप, त्याग, ध्यान, स्वाध्याय, सेवा, साधना इन सभी क्रियाओं के मूल में आत्मा को कर्मों से मुक्त बनाना होता है।

शास्त्र में कहा गया कि जिस प्रकार पेड़ से पका हुआ पान गिर जाता है उसी प्रकार यह नश्वर शरीर भी एक दिन समाप्त हो जाता है। अतः व्यक्ति को

जितना भी जीवन जीना है, उसे किस प्रकार जीए, यह महत्वपूर्ण है। व्यक्ति अच्छा जीवन जिए, इसके लिए व्यक्ति के जीवन में ईमानदारी होनी चाहिए। अपने व्यवहार लेन-देन, व्यवहार, व्यापार में जितना संभव हो सके ईमानदारी रखने का प्रयास करना चाहिए। चोरी, धोखा-धड़ी, छल-कपट, आदि से बचना चाहिए। ईमानदारी जीवन में रहती है तो आत्मा निर्मल बन सकती है। आचार्य तुलसी द्वारा चलाए गए 'अणुव्रत' में भी किसी भी धर्म-सप्ताद्य, जाति का व्यक्ति छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार कर अपने जीवन को नैतिक और प्रामाणिक बना सकता है। यद्यपि ईमानदारी का पालन करने वाले के समुख कुछ कठिनाईयां

आ सकती है, उसमें भी मजबूती रखनी चाहिए। नशीली चीजों के सेवन से बचने का प्रयास करें। इन सबके साथ ही जीवन में धर्मोपासना भी चले तो मानव जीवन का यह लक्ष्य कि चेतना निर्मल बने, तो वह भी जितना हम करेंगे, सिद्ध हो सकता है। किशनगढ़ की जनता में ईमानदारी, अहिंसा, नैतिकता, व नशामुक्ति की चेतना बनी रहे।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त साधी प्रमुखा विश्रृत विभाजी ने श्रद्धालुओं को उद्घोषण प्रदान किया। उन्होंने कहा कि अच्छा जीवन वह होता है जिसमें व्यक्ति संतोष का अनुभव करता है। अच्छे जीवन के लिए हमें लोभ की चेतना को कम करना होगा। पदार्थ के प्रति आकर्षण कम होगा तो हमें संतोष की अनुभूति होगी। इसके साथ ही जीवन में पवित्रता हो और व्यक्ति को आनंद से रहना चाहिए। तत्परतात् स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष पन्नालाल छाजेड़, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष रैनक घोड़ावत ने आचार्य प्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूर्व विधायक श्री सुरेश टांक ने आचार्यश्री के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

धर्म ही शरण देने वाला है, त्राण देने वाला है : आचार्यश्री महाश्रमण

रलावता।

10 जनवरी 2026

जन-जन के मानस को आध्यात्मिक अभिसंचिन प्रदान करने वाले जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी मार्बल नगरी किशनगढ़ में अध्यात्म की गंगा प्रवाहित करने के पश्चात् आज प्रातः लगभग 13 किमी का विहार सुसंपन्न कर रलावता में स्थित महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय में पधारे।

विद्यालय परिसर में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित जनता को महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वांगमय में चार शरण हैं - अर्हतों की शरण, सिद्धों की शरण, साधुओं की शरण, और



केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण है। धर्म ही तभी अर्हत्, सिद्ध, और साधु हो सकते हैं। इसलिए एक शरण धर्म है, उसे अर्हतों में भी देखा जा सकता है, सिद्धों में भी देखा जा सकता है, और साधुओं में भी देखा जा सकता है। अतः धर्म ही शरण देने वाला है, त्राण देने वाला है। जब व्यक्ति के कर्म उदय में आते

कष्ट पा सकते हैं। अपने किए हुए कर्म पुण्य और पाप दोनों रूपों में हो सकते हैं। पाप कर्मों के उदय से कष्ट, वेदना, आदि झेलनी पड़ती है।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति यह सोचे कि मेरा त्राण एकमात्र धर्म है और उसकी साधना करनी चाहिए धर्म की साधना करते-करते एक दिन सर्व दुःख मुक्ति-मोक्ष की स्थिति प्राप्त हो जाएगी। बुद्धापा, बीमारी और मृत्यु को कोई रोक नहीं सकता। वैराग्य आने पर व्यक्ति साधु बन जाते हैं और वे सर्व दुःख मुक्ति के लिए ही साधु बनते हैं। इस मानव देह में कष्ट भी आ सकते हैं परन्तु साधना करते-करते एक समय आता है कि सम्यक्तवी प्राणी को केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है और फिर मोक्ष की भी संप्राप्ति हो जाती है।

पूज्य प्रवर ने शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि विद्यार्थियों

को पुस्तकीय ज्ञान देने के साथ-साथ अच्छे नैतिक व जीवनोपयोगी ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए जिससे बालकों का बौद्धिक, मानसिक, व भावनात्मक विकास हो सके। विद्या के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी प्रदान किए जाएं तो बहुत अच्छी बात हो सकती है। पूज्य प्रवर ने विद्यार्थियों को सद्बावना, नैतिकता, व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। आचार्य प्रवर ने कहा कि इस प्रकार सभी के जीवन में धर्म रहे और चेतना अच्छी रहे, तो धर्म उसके लिए त्राण और शरण बन सकता है, जो परम सुख प्रदान करने वाला भी बन सकता है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त विद्यालय की प्रिंसीपल निर्मला फुलवारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मर्यादा महोत्सव पर विशेष : छोटी खाटू

1. छोटीखाटू में आचार्यों की श्रृंखलां में सर्वप्रथम चतुर्थ आचार्य जीतमलजी का विं स 1920 में पदार्पण हुआ।
2. आचार्य जीतमलजी के अतिरिक्त आचार्य डालगणी, कालूगणी तुलसीगणी, महाप्रज्ञजी एवं महाश्रमणजी का भी अनेक बार पदार्पण हुआ।
3. छोटीखाटू में सर्वप्रथम चारित्रात्माओं का चातुर्मास वि स 1888 में आचार्य रायचंदजी स्वामी के शासनकाल में साधीश्री हस्तुजी पीपाड़ का हुआ।
4. विं स 1888 से 1958 तक कुछ - कुछ अंतराल में चातुर्मास हुए लेकिन स. 1960 से 2082 अब तक अनवरत रूप से छोटीखाटू में चातुर्मास प्रवास मिलता रहा है।
5. 'महाश्रमण' मुनि मुदितकुमारजी की प्रथम अणुव्रत प्रेक्षा यात्रा का समाप्त छोटीखाटू में हुआ।
6. जब 'महाश्रमण' मुनि मुदितकुमारजी स्वामी सरदारशहर की ऐतिहासिक अणुव्रत यात्रा करके छोटीखाटू पधारे तब आचार्य तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञजी को उनकी अगवानी में भेजा तत्पश्चात् युवाचार्य महाप्रज्ञजी जब 'महाश्रमण' मुनि मुदितकुमारजी को साथ लेकर छोटीखाटू स्थित तेरापंथ सभा भवन में पधारे तब स्वयं आचार्य तुलसी ने अपने पट्ट पर उत्तर कर 'महाश्रमण' मुनि मुदितकुमारजी का अभिवादन किया।
7. छोटीखाटू में वैसे कोई बड़े संघीय आयोजन नहीं हुए आचार्य कालूगणी और तुलसीगणी ने होली चौमासे का अवसर प्रदान किया था।
8. आचार्य महाप्रज्ञजी का जब छोटीखाटू पदार्पण हुआ तब फरमाया छोटीखाटू ऐसा क्षेत्र है जहाँ संघीय आयोजन किया जा सकता है।
9. आचार्य महाश्रमणजी ने 18 नवम्बर 2022 को छोटीखाटू

में ही छोटीखाटू के लिए सन, 2026 के मर्यादा महोत्सव की घोषणा की आचार्य महाश्रमणजी के शासन में यह पहला ही अवसर था जिस क्षेत्र के लिए मर्यादामहोत्सव घोषित हुआ उसी क्षेत्र में उसकी घोषणा की गई।

10. तेरापंथ धर्मसंघ में अब तक 58 क्षेत्रों में 161 मर्यादामहोत्सव सम्पन्न हो चुके 162 वां मर्यादामहोत्सव छोटीखाटू में आयोजित है जो 59 वां क्षेत्र होगा।
11. छोटीखाटू से सर्व प्रथम दीक्षा मुनिश्री गुलाबचंदजी स्वामी की आचार्य जीतमलजी स्वामी के शासनकाल में सम्पन्न हुई।

▲ कुछ विशेष तथ्य ▲

12. छोटीखाटू से अब तक 18 व्यक्तियों ने दीक्षा ग्रहण की जिसमें 8 साधु मुनिश्री गुलाबचंदजी, बिंजराजजी, जवरीमलजी, सोहनलालजी, वृद्धिचंदजी, प्रबुद्धकुमारजी, तन्मयकुमारजी और मेघ कुमारजी और 9 साध्वियां साधीश्री तीजा जी, चांदूजी, केशरजी, सूरजकंवरजी, जयकंवरजी, कंचनकंवरजी, शांतिप्रभाजी, ललितरेखाजी, श्रुतयशाजी एवं क्षितिप्रभाजी।
13. वर्तमान में छोटीखाटू से 2 मुनि, मुनिश्री तन्मयकुमारजी, मुनि मेघकुमारजी एवं 4 साध्वीयां, साधीश्री शांतिप्रभाजी, डॉ. साधीश्री ललितरेखाजी, डॉ. साधीश्री श्रुतयशाजी एवं साधीश्री क्षितिप्रभाजी दीक्षित हैं।
14. साधीश्री तिजांजी छोटीखाटू ने आचार्य माणकणी और डालगणी के मध्य अंतिरमकाल में जसोल की एक साधीश्री धन्नाजी को दीक्षित किया।
15. छोटीखाटू की चार चारित्रात्माओं को अग्रगण्य पद

पर प्रतिष्ठित किया गया। मुनिश्री जवरीमलजी स्वामी, मुनिश्री सोहनलालजी स्वामी, साधीश्री तिजांजी एवं साधीश्री श्रुतयशाजी।

16. छोटीखाटू में आचार्य कालूगणी ने मुनि तुलसी को दोपहर के व्याख्यान देने का निर्देश प्रदान किया।
17. मुनिश्री नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञजी) की लिपि सुधार का कार्य छोटीखाटू में प्रारम्भ हुआ।
18. वर्तमान में एक बहन मुमुक्षु दिव्या फुलफगर पारमार्थिक शिक्षण संस्था में साधनारात है।
19. छोटीखाटू में मुनिश्री रामलालजी ने लगातार 8 वर्षों तक स्थिरवास किया यह छोटीखाटू में देवलोकगमन होने वाले चारित्रात्माओं में प्रथम थे।
20. छोटीखाटू से अनेक महानुभाव ने केन्द्रीय संस्थाओं को गौरवान्वित किया। श्रीहंसराजी बैताला एवं श्रीमान सुखलालजी सेठिया ने सर्वोच्च संस्था जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष पद को सुरोमित किया जिसमें श्रीमान सुखलालजी सेठिया ने दो बार यह अवसर प्राप्त किया। इसी संस्था में कोलकाता के आंचलिक प्रभारी के रूप में श्रीप्रकाश बैताला ने और अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्रीमती नीलमजी सेठिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की साथ ही साथ अखिल भारतीय तेरापंथ के युवक परिषद के महामंत्री के रूप में श्री प्रफुलजी बैताला ने दो बार सेवाएं प्रदान की। वर्तमान में समणसस्कृति संकाय द्वारा जाने तेरापंथ इतिहास के संयोजक के रूप में श्री संदीपजी भंडारी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।
21. छोटीखाटू में लगभग 250 घर जैनीयों के हैं विशेष बात यह है की सभी के सभी 250 परिवार तेरापंथी हैं।

मां तुझे प्रणाम का सफल आयोजन

चेन्नई

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई के अमृत जयंती वर्ष के विशेष उपलक्ष्य में देश के बीर जवानों को समर्पित एक भव्य संगीतमय प्रस्तुति मां तुझे प्रणाम का सफल आयोजन चेन्नई तेरापंथ सभा द्वारा कामराज मेमोरियल हॉल, तैनाम्पेट

सभाध्यक्ष श्री अशोक खतंग ने

में किया गया। जाह्नवी सांड द्वारा निर्मित, ज्ञानशाला की गतिविधिओं का ऑडियो विसुअल प्रेजेंटेशन को LED पर दिखाया गया। तेरापंथी सभा चेन्नई (1950 - 2025) के 75 स्वर्णिम वर्षों की यह गौरवशाली यात्रा अनेक समर्पित पुरोधाओं के अथक परिश्रम, दूरदर्शी नेतृत्व और निस्वार्थ सेवा का सुफल है।

सभाध्यक्ष श्री अशोक खतंग ने

अमृत जयंती वर्ष के इस ऐतिहासिक अवसर पर सभा द्वारा 'अमृत रश्मियां' स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

कोलकाता से समागत श्री राजेश सदानी युप ने भावपूर्ण एवं देश भक्ति से ओतप्रोत प्रस्तुति द्वारा सभी के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत किया और देश के बीर जवानों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

162वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष

मर्यादा मधुमास है

● साधीश्री अणिमाश्री, डॉ. साधीश्री सुधाप्रभा ●

मर्यादा के महाकुंभ का, कैसा भव्य नजारा है।

मेरें शरण गच्छामि का, गूंज रहा शुभ नारा है।।

आर्य भिक्षु का हस्तलिखित यह पत्र गण का प्राण है।।

मर्यादा है शान संघ की, मर्यादा ही त्राण है।।

मर्यादित अनुशासित गण यह, प्राणों से भी प्यारा है।।

जायाचार्य ने मर्यादा का, कितना मान बढ़ाया है।।

मर्यादोत्सव देकर गण का, गौरव शिखर चढ़ाया है।।

मर्यादा से सुसज्जित यह, तेरापंथ हमारा है।।

धरती अम्बर, चाँद सितारे, मर्यादा में रहते हैं।।

मर्यादा में रहो हमेशा, सागर सारे कहते हैं।।

मर्यादा आधार सभी का, रक्षा कवच सुप्यारा है।।

मर्यादा आश्वास संघ का, मर्यादा विश्वास है।।

मर्यादा है श्वास संघ का, मर्यादा मधुमास है।।

आर्य भिक्षु का शासन पाकर, चमका भाग्य सितारा है।।

मर्यादा के महानायक प्रभु महाश्रमण रखवारे हैं।।

प्रगति पंथ पर सदा बढ़ाते, जीवन के उजियारे हैं।।

मर्यादा के अमृत रस से, तृप्त बना गण सारा है।।

लय : व्याऊं बिनणी

उदयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में सीपीएस एकैडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर ने मेक योर मार्क कार्यशाला का आयोजन किया।

इसके पश्चात अध्यक्ष अशोक चोरडिया द्वारा स्वागत उद्घोषन किया गया।

सीपीएस के मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत और राष्ट्रीय प्रशिक्षक बबीता रायसोनी द्वारा विभिन्न एक्टिविटी और गेम के माध्यम से अपनी समस्याओं के

समाधान, डिजिटल डीटॉक्स, समय प्रबंधन, रोल बैलेंसिंग, वैल्यू योर वड्स आदि के बारे में विस्तार से बताया गया। इस कार्यशाला में 40 सदस्यों ने भाग लिया।

अतिथि राहुल बड़ला, समाजसेवी राजकुमार सुराणा, सभाध्यक्ष कमल नाहटा, शाखा प्रभारी कुलदीप मारू,

सीपीएस एकैडमी सह प्रभारी अमित गन्ना, उदयपुर अभातेयुप से प्रबुद्ध विचारक राजीव सुराणा, अभिषेक पोखरणा, अजीत छाजेर, वेस्ट जोनल इंचार्ज संदीप हिंगड़ आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विनीत फुलफगर द्वारा किया गया।



सर्वाइकल कैंसर टेस्ट जागरूकता सेमिनार का हुआ आयोजन

गोरेगांव, मुंबई।

तेरापंथ भवन गोरेगांव के प्रांगण में अभातेम मंदिर द्वारा आयोजित आरोग्य के तहत सर्वाइकल कैंसर (पेप स्मिर्ट टेस्ट) सेमिनार (कार्यशाला) का आयोजन गोरेगांव महिला मंडल द्वारा किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. साइली वानखेड़कर MBBS, MS, FRM, IBCLC (Obstetrician & Gynaecologist) पधारे, विशेष

उपस्थिति में अभातेम मंदिर सदस्य रेखा सियाल की विशेष उपस्थिति रही।

महिला मंडल अध्यक्ष डिम्पल हिरण ने सभी अतिथियों एवं बहनों का स्वागत अभिनन्दन किया एवं सर्वाइकल कैंसर के लिए टेस्ट कराने के लिए सभी बहनों को प्रेरित किया। कोषाध्यक्ष कांता सिसोदिया ने मुख्य अतिथि एवं सभी बहनों का आभार व्यक्त किया। संचालन महिला मंडल मंत्री कल्पना चोरड़िया ने किया।

मंगल भावना समारोह आयोजित

वणी।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रेरणा एवं पावन आशीर्वाद से दीक्षार्थी मुमुक्षु चंदनाजी के दीक्षा प्रसंग में मंगल-भावना समारोह तेरापंथ भवन वणी में अत्यंत श्रद्धालुओं एवं आध्यात्मिक वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय भंडारी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सरोज भंडारी, तेरापंथ प्रोफेशनल फ़ोरम, यवतमाल-अमरावती अध्यक्ष सपना ने अपने-अपने भावों के माध्यम से मुमुक्षु चंदना के आगामी साधनामय जीवन के लिए मंगल कामनाएँ प्रकट कीं। कार्यक्रम

में ज्ञानशाला के बच्चों एवं प्रशिक्षिका संगीता द्वारा प्रस्तुत गीतिका ने उपस्थित श्रद्धालुओं के हृदय को स्पर्श किया। इस अवसर पर मुमुक्षु चंदना ने अपने उद्घोषन में संसार और वैराग्य के मार्ग का अत्यंत सरल, गूढ़ एवं प्रभावशाली विवेचन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि संसार और वैराग्य—दोनों ही मार्गों में कठिनाइयाँ हैं, परंतु वैराग्य के पथ पर यह स्पष्ट होता है कि कितनी परीक्षाओं और सहनशीलता से गुजरना होगा, जबकि संसार में इच्छाओं और अपेक्षाओं की कोई सीमा नहीं होती। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सुश्री स्वेता जैन द्वारा किया गया।

संक्षिप्त खबर

मासखमण तप अभिनन्दन समारोह

गंगाशहर। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में आंचल बैद का मासखमण तप अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि जैन आगमों में बताया गया है कि सोने व चांदी की शुद्धता के लिए अग्नि में तपाया जाता है। इसी प्रकार आत्मा को तप की अग्नि में तपाने से निर्मल व पवित्र बनती है।

ज्ञानार्थी परीक्षा-2025 आयोजित

सिंकंदराबाद। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के निर्देशन में एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिंकंदराबाद के तत्वावधान में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा 2025, रविवार 11 जनवरी को सुव्यवस्थित रूप से आयोजित की गई। पूरे देशभर में और विदेशी केंद्रों में भी एक साथ एक समय में आयोजित होने वाली इस वार्षिक मौखिक परीक्षा में हैदराबाद में कुल 7 परीक्षा केन्द्र स्थापित किए गए। तेलंगाना क्षेत्र के कुल सात परीक्षा केंद्रों में आयोजित इन वार्षिक मौखिक परीक्षाओं में *280* ज्ञानार्थियों ने सहभागिता दर्ज कराई और आंध्रा से 5 केंद्रों में 74 ज्ञानार्थी परीक्षा में सहभागी बने।



संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि-अमूल्य निधि



नामकरण संस्कार

- **सूरत।** लूणकरणसर निवासी सूरत प्रवासी दिनेश कुमार बुच्चा के पुत्र रोहित प्रियंका बुच्चा के प्रांगण में पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक जयकांत खटेड, विनीत श्यामशुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। नवजात शिशु का नाम ओजश कुमार घोषित किया।
- **गंगाशहर।** मेघराज-शारदा देवी मरोटी के पुत्र एवं पुत्रवधु धीरज-कीर्ति मरोटी के कन्या धन की प्राप्ति पर नामकरण संस्कार जैन संस्कारक पवन छाजेड, देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने उत्साहवर्धक जैन मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।
- **उदयपुर।** आसाम प्रवासी देशनोक (मूल निवासी) स्व मदनलाल की पौत्री, अशोक श्यामशुखा की पुत्री का उदयपुर में जन्म होने पर नामकरण संस्कार का आयोजन किया गया। जैन संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा 3 बार नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम संपन्न करवाया गया।
- **साउथ हावड़ा।** श्रीदूङगरगढ़ निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी प्रदीप-चंद्रकांता पुगलिया की सुपौत्री एवं मनीष - प्रियंका पुगलिया की सुपौत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से संस्कारक पवन कुमार बैंगाणी एवं बीरेंद्र बोहरा ने जैन मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

मिशन 1313 का अनावरण एवं प्रथम कार्यसमिति का शपथ ग्रहण

कांकरोली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के निर्देशन में मिशन 1313 (सत्र 2026-27) के बैनर एवं पोस्टर का अनावरण तथा टी.पी.एफ कांकरोली शाखा की प्रथम कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन 'शासनश्री' मुनि सुरेश कुमार जी, टी.पी.एफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि डॉ. रजनीश कुमार जी, मुनि संबोध कुमार जी एवं सहवर्ती संतों के पावन सान्निध्य में हुआ।

समारोह को संबोधित करते हुए टी.पी.एफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक

मुनि डॉ. रजनीश कुमार जी ने कहा कि मिशन 1313 तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की एक अनूठी, दूरदर्शी और मानवीय पहल है, जिसका संकल्प है कि कोई भी प्रतिभावान तेरापंथी बच्चा केवल आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित न रह जाए। यह मिशन 1313 बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की जिम्मेदारी को पूरे समर्पण के साथ निभाने का संकल्प है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राजसमंद और कांकरोली को अलग-अलग इकाइयों के रूप में स्थापित करना विभाजन नहीं, बल्कि

संगठनात्मक विस्तार का सशक्त माध्यम है, जिससे टी.पी.एफ की योजनाएँ और अधिक प्रभावी रूप से धरातल पर उतरेंगी। एडवोकेट रिटेश दुकलिया को कांकरोली शाखा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया।

टी.पी.एफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन चोरड़िया ने मिशन 1313 की विस्तृत जानकारी देते हुए नवगठित कार्यकारिणी को संगठनात्मक उद्देश्यों पर केंद्रित रहकर सेवा एवं कर्तृत्व के नए आयाम स्थापित करने की शुभकामनाएँ दीं। राष्ट्रीय सहमंत्री राकेश सुतरिया आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वीश्री पंचतत्व में हुई विलीन

गंगाशहर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मनुयशा जी लालूड़ा का आज पश्चिम रात्रि 3:27 मिनट पर शान्ति निकेतन सेवा केन्द्र में देवलोकगमन हो गया था।

साध्वी मनुयशा जी की बैकुंठी यात्रा शान्तिनिकेतन सेवा केन्द्र से शुरू होकर गंगाशहर के विभिन्न मार्गों से होती हुई पुरानी लेन ओसवाल मुकितधाम पहुंची। जहाँ उनका अंतिम संस्कार किया गया। साध्वी मनुयशा जी का जन्म राजस्थान के मेवाड़ के लालूड़ा गाँव में 31/08/1967 में हुआ। 24

जनवरी, 1996 में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी से लालूड़ में साध्वी दीक्षा ग्रहण की थी। इन्होंने राजस्थान, नेपाल, विहार, बंगाल, असम, भूटान, सिक्किम, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि क्षेत्रों की यात्रा की। साध्वीश्री जी ने अपना समय जप स्वाध्याय ही बिताया।

उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी स्वामी ने शान्ति निकेतन पंहुचकर साध्वीश्री जी की आत्मा के प्रति अपने भाव प्रकट की। एक कविता के माध्यम से साध्वीश्री जी के प्रति अपने भाव प्रकट किये। इस अवसर पर सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशद्ग्रन्था जी ने अपने विचार

प्रकट करते हुए कहा कि साध्वी मनुयशा जी ने गठिया बीमारी को समता से सहन किया। उनोदरी तप करती थी। साध्वी लव्यश्या यशा जी ने इस अवसर पर अपनी भावनाएँ प्रकट करते हुए कहा कि साध्वी श्री मनुयशा जी उच्च मनोबल की धनी थी। अंतिम समय में भी अपने कर्मों के प्रति जागरूक थी।

साध्वी मनुयशा जी ने कहा कि हम दोनों ने एक साथ ही दीक्षित हुए थे। साध्वीवृन्द ने गीतिकाओं के माध्यम से भाव भीनी विदाई दी। तेरापंथ सभा गंगाशहर के अध्यक्ष नवरतन बोथरा के नेतृत्व में सभी कार्यों को कुशलता से संपादित किया गया।

162वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष

तेरापंथ धर्मसंघ का कुंभ मेला - मर्यादा महोत्सव

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

मर्यादा, सिद्धान्त संविधान नियम कानून- ये सारे के सारे शब्द बोलने पढ़ने में अलग-अलग होते हुए भावार्थ में एकार्थक लगते हैं। जितने ये आसान सहज सरल लगते हैं उतने में पालन करने में कठिन प्रतीत होते हैं। मर्यादा-नियम-कानून मात्र संघ समाज परिवार की दृष्टि होते हैं। सामूहिक जीवन में मर्यादा का होना अपेक्षित होता है। कहा जा सकता है अपेक्षित ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। मर्यादा के अभाव में कोई संगठन सुचारू रूप से नहीं चल सकता। कानून, मर्यादा और व्यवस्थागत नियमों से ही मर्यादित अनुशासित और सुसंगठित समाज वराष्ट्र का निर्माण होता है।

बिना मर्यादा संविधान के किसी संघ समाज और राष्ट्र को सुचारू रूप से चलाना नामुकिन लगता है। यद्यपि प्रत्येक संघ समाज और राष्ट्र की मर्यादा एक जैसी नहीं होती सबका चिन्तन-विकास अलग-अलग रूपों में होने से कुछ नियम कानून-मर्यादा अपने ढग से होते हैं। प्रश्न उभरकर सामने उपस्थित होता है मर्यादाएं

क्या, अनुशासन क्यों और किसके लिए। पशुओं का समूह होता है उसके लिए उनका कोई चिन्तन नहीं होता, उन पर भी नियम कानून मनुष्य कृत होते हैं। उनको जहां बांधते हैं वहीं बंधे रहते हैं, जो देते हैं खाना होता है जैसी परिस्थिति में रखते हैं उसी अनुसार रहना उनकी मजबूती है। वे चाहते हुए अपनी इच्छानुसार करना उनके लिए संभव प्रतीत नहीं होता उनमें बुद्धि का ज्ञान का विकास तो होता है परंतु उसका उपयोग करना उनके वश की बात नहीं। प्रत्येक समाज में साधु संस्था का अपना एक अलग ही महत्व होता है।

धार्मिक संगठन का भी भारतीय भूमि पर अलग-अलग विधान है। दूरदर्शी, अपूर्वमेधा के धनी श्री भिक्षु स्वामी ने अपनी उच्च स्तरीय सोच और चिन्तन को लेखनी बढ़ा करने के बाद धर्मसंघ में तत्कालीन संतों के समक्ष प्रस्तुत कर उनकी रजामंदी के बाद उन्होंने ये मर्यादाएं लागू की। वे भी प्रसन्न मन से स्वीकृत करवाईं। उन्होंने स्पष्ट कहा- जिसका मन साक्षी दे भली भांति साधुपुन पलता जानेगा

में तथा अपने आप में साधुपुन माने तो गण में रहे तथा इन मर्यादाओं को स्वीकार करे। उन्होंने कहा-चल कपटपूर्वक गण में रहने का त्याग है। आज जो तेरापंथ का वटवृक्ष जिस गति से विकसित हुआ उसमें आचार्य भिक्षु की श्रमशीलता दूरदर्शिता का सर्वाधिक उच्च स्थान है। यद्यपि उत्तरवर्ती आचार्यों ने समय की नजाकत को देखते हुए इसकी श्रीवृद्धि में अथक परिश्रम किया तथा वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी भी सुदूर प्रान्तों की दीर्घकालीन यात्राओं में इसकी जड़ों को ओर अधिक मजबूत की है, कर रहे हैं।

वर्तमान में भी एकादशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी स्वयं अपने श्रम समय और समझ का नियोजन करते हुए साधु-साधियों तथा श्रावक-श्राविका समाज के लिए प्रयत्नरत रहते हैं। प्रतिवर्ष यह मर्यादा महोत्सव माघ शुक्ला सप्तमी को होता है। कहां करना निर्धारण इसका स्थान आचार्य स्वेच्छा से निश्चित करते हैं। इस प्रकार तेरापंथ का मर्यादा महोत्सव कुंभ के मेले के समान है।

मर्यादोत्सव मन भाएं

● साध्वी वर्धमानयशा ●

मर्यादा की मंगल महिमा गाएं, मर्यादोत्सव मन भाएं
मर्यादा पुरुषोत्तम भिक्षु तुमको आज बधाएं
जयाचार्य की दूर दृष्टि से यह त्यौहार मनाएं।।

अंधेरी ओरी में भिक्षु ने आलोक बिखेरा
हाथ जोड़कर बोले नत हो पंथ प्रभो यह तेरा
भिक्षु ने शासन की नींव गहरी लगाई है,
जयाचार्य ने इसकी महिमा शिखरों चढ़ाई है
गण उजियारा, है रखवारा, मिलता इससे सबल सहारा
गण मेरा है, मैं हूं गण का यह संकल्प सजाएं
गण-गणपति की भक्ति हमारे रोम-रोम रम जाएं
सौभागी हैं हम सारे गुरु महाश्रमण को पाएं।।

जैन धर्म की तेरापंथ बढ़ा रहा है शान,
एक गुरु और एक विधान है इसकी पहचान
गुरु आज्ञा लक्ष्मण रेखा है, गुरु आज्ञा ही त्राण
संघ चतुर्विध गुरु आज्ञा पर करें प्राण कुर्बान
विनय, समर्पण और अनुशासन, मर्यादा पर टिका यह शासन
जय-जय शासन जय मर्यादा मंगल धेष लगाएं
दसों दिशाओं में गूंजित है इसकी यश गाथाएं।।

मर्यादित यह संघ हमारा लगता सबको प्यारा,
कलयुग में सतयुग सा देख रहे हैं नजारा,
मर्यादा में रहने वाला पाता है सम्मान,
लांघी जिसने मर्यादा मिट जाता नामो निशान
देखो नदियां चाहे समन्दर, छोड़ी सीमा तो प्रलय भयंकर
नम में तारा चम-चम करता सबके मन को भाएं।
अम्बर से धरती पर आएं तो पत्थर कहलाएं।।

तर्ज - कितना प्यार तुझे

तेरापंथ का मर्यादा महोत्सव : एक कल्प प्रयोग

● मुनि मोहजीत कुमार ●

भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के अनेक उत्सवों का अपना उत्स और महात्म्य है। भारत में किसी न किसी धर्म, परम्परा आदि से जुड़े हुए उत्सव हर दिन त्यौहार सा बन जाता है। ऐसे दिन प्रेरणा के प्रतीक भी बन जाते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की उर्जस्वल परम्परा से जुड़ा एक उत्सव, जिसे मर्यादा महोत्सव के नाम से पहचाना जाता है। यह पर्व उत्सव लौकिकता से पृथक अलौकिक भाव चेतना के साथ जुड़ा हुआ है। यह उत्सव तेरापंथ का महाकुम्भ है। इसमें आचार्य द्वारा निर्दिष्ट साधु-साधियों के वर्ग सम्मिलित होकर साधुता की तेजस्विता, कर्तव्य की कर्मशीलता एवं नवसृजन की निष्ठा का भाव जगाता है। मर्यादा और एक विधान के प्रति समर्पित रहने के संस्कारों का विकास एवं सघनता के लिए प्रेरणा और प्रशिक्षण का महान उपक्रम है।

तेरापंथ एक सुगठित धर्म शासन है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि आगे इसके विकास की कोई संभावना न हो। इस अर्थ में हमें निश्चय ही वर्तमान के प्रति अश्वस्त विश्वस्त होना चाहिए। तेरापंथ की अपनी मौलिक विशेषता है- संगठन पक्ष। देह

तत्व होते हुए भी अभिन्न हैं। हम देह से मुक्ति की यात्रा कर सकते हैं। आत्मा तत्व की प्राप्ति के लिए साधना का शिखर प्राप्त करना जितना अपेक्षित है उतना ही संगठन के साथ जुड़कर अपने आपको भावित करना जरूरी है।

विश्व में तेरापंथ धर्म संघ का एक विशिष्ट उदाहरण है कि जहां संगठन की सौष्ठवता के लिए मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा और अनुशासन की दृष्टि से उच्चता को प्राप्त है। यदि हम इसकी मीमांसा में जाएं तो हमें तीन बातें विशेष रूप से नजर आएंगी। श्रमण महावीर ने अनुशासन के जो सूत्र दिये वे निश्चित रूप से तेरापंथ के संगठन की आधार शिलाएं हैं। इस आधार पर तेरापंथ ने जो अनुशासन के क्षेत्र का विकास किया है उसके तीन प्रमुख आधार हैं। सुसंगत, संविधान जागरूक नेतृत्व तथा सदस्यों का समर्पण भाव। इन तीन तत्वों पर तेरापंथ की विशिष्टता जगत मान्य है।

आचार्य भिक्षु ने नेतृत्व को बहुत महत्व दिया। उन्होंने तत्कालीन साधु समाज की स्थिति के संदर्भ में अनुभव किया। मर्यादा के बिना साधु वर्ग की आचार्य चर्चा को सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। इस अनुभव के आलोक में आचार्य भिक्षु ने संवत् 1832 में तेरापंथ धर्मसंघ का पहला संविधान लिखा। शिष्य

मुनि भारमल्ल जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इसके साथ ही एक नेतृत्व की परम्परा का सूत्रपत्र हो गया। आचार्य भिक्षु ने उस मर्यादा पत्र में समय-समय पर अनेक संशोधन और परिष्कार किया। संवत् 1859 में लिखा अन्तिम संविधान पत्र मर्यादा महोत्सव का आधार भूत संवैधानिक दस्तावेज बना हुआ है। आचार्य भिक्षु ने इसकी नींव में मर्यादा का ऐसा शिला खण्ड रखा जो इस महल को निरन्तर सुदृढ़ आधार प्रदान कर रहा है। आचार्य भिक्षु के बाद श्रीमद्भजयाचार्य जी ने उनके अनुभवों का लाभ उठाते हुए तेरापंथ को एक नया अवदान प्रदान किया। जिसकी पहचान 'मर्यादा महोत्सव' के रूप में विश्व व्यापी बनी।

मर्यादा महोत्सव तेरापंथ की अनुशासन, व्यवस्था, प्रगति, नवसृजन, प्रेरणा, प्रोत्साहन, सारणा-वारणा, अतीत की समीक्षा, वर्तमान का चिन्तन तथा भविष्य की कल्पना का महान उत्सव है। तेरापंथ के महाकुम्भ मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य द्वारा चतुर्विध धर्मसंघ

को विशेष उद्दोधन प्रदान करते हैं तथा नव निर्मापित गीत संगान के साथ अग्रिम वर्ष हेतु साधु-साधियों के चातुर्मास की घोषणा करवाते हैं। इस प्रकार मर्यादा महोत्सव का स्वरूप अपनी विशिष्टता के साथ जन-जीवन के लिए प्रेरणाप्रद है ऐसी प्रेरणा प्रदाताओं को आत्मीय नमन।

आचार्य के उपपात में साधु-साधियों के मध्य निर्धारित विषयों पर चर्चाएं होती हैं। चर्चित विषयों के आधार पर संघ की सुव्यवस्था के लिए विशेष निर्णय लिए जाते हैं। प्रत्येक अग्रणी आचार्य के सन्मुख विगत वर्ष का कार्य विसरण प्रस्तुत करता है। विशेष कार्य करने वाले को गुरु पुरुस्कृत करते हैं। कहीं किसी से मर्यादा अथवा व्यवस्था में त्रुटि हुई हो तो उसको प्रायाशित देकर शुद्ध करते हैं। अपने ढंग के इस महोत्सव पर आचार्य द्वारा समूचे संघ को विशेष आदेश- निर्देश दिये जाते हैं। आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादाओं के उस पत्र का भी वाचन किया जाता है। जो स्वयं उनकी हस्तलिपि में प्रत्यक्ष है। सभी साधु-साधियां दीक्षा क्रम से खड़े होकर उन मर्यादाओं को स्वीकृत प्रदान करते हैं। मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में संघ संघपति एवं मर्यादा के प्रति समर्पण भरे सस्वर संगान साधु-साधियां एवं समणियां करती हैं।

इस अवसर पर आचार्य द्वारा चतुर्विध धर्मसंघ को विशेष उद्दोधन प्रदान करते हैं तथा नव निर्मापित गीत संगान के साथ अग्रिम वर्ष हेतु साधु-साधियों के चातुर्मास की घोषणा करवाते हैं। इस प्रकार मर्यादा महोत्सव का स्वरूप अपनी विशिष्टता के साथ जन-जीवन के लिए प्रेरणाप्रद है ऐसी प्रेरणा प्रदाताओं को आत्मीय नमन।



162वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष

साधक का सुरक्षा कवच है मर्यादा पत्र

● मुनि कुमुद कुमार ●

तेरापंथ की आन, बान और शान है मर्यादा। बहुत नाज होता है आचार्य श्री भिक्षु की उस दूरदर्शी सोच पर जिसने मर्यादाओं का निर्माण किया। वि.सं. 1832 में प्रथम मर्यादा पत्र लिखा गया। समय समय पर मर्यादाओं का विस्तार हुआ। वि.सं. 1859 में अंतिम मर्यादा पत्र लिखा गया। 161 वर्ष पूर्व बालोतरा में श्रीमद् जयनार्थ ने इसे मर्यादा महोत्सव के रूप में मनाना प्रारंभ किया। मर्यादा बंधन नहीं मुक्ति का द्वार है। मर्यादा जीवन का भार नहीं श्रृंगार है। भौतिक एवं पदार्थवादी युग में जहां हर कोई स्वतंत्र रहना चाहता है, वहाँ एक गुरु के नेतृत्व में संयम जीवन का पालन करना प्रेरक एवं अनुकरणीय है। तेरापंथ यानी अपने अहंकार एवं ममकार का विसर्जन। अहंकार के वशीभूत बड़े बड़े साधक संयम पथ से विमुख हो गए। नाम, यश, कर्ति का ममत्व, संयमी जीवन के उपयोगी उपकरणों के प्रति मोह का भाव साधक को संसार समुद्र में भटका देता है। सारणा एवं वारणा के द्वारा आचार्य अपने शिष्य-शिष्याओं का सम्यक् विकास करते हैं। गलती का परिष्कार होना अनिवार्य है, अन्यथा प्रमाद के कारण अनेक समस्या पैदा हो जाती है। अपनी अपनी क्षमता एवं योगयता अनुसार उन्हें प्रोत्साहन मिलता है तभी व्यक्तित्व का विकास होता है। साधु की साधना

उज्ज्वलतम होती है। शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण तथा गुरु का शिष्य के योगक्षेम का चिंतन यह है तेरापंथ की विशेषता। डोर से बंधी पतंग ऊंची आकाश में उड़ती है। डोर से टूटते ही पतंग नीचे गिर जाती है। बंधा हुआ झाड़ कचरा साफ करता है। बिखरा हुआ झाड़ खुद कचरा बन जाता है। जहां संगठन, व्यवस्था, मर्यादा है वहाँ परिवार, समाज एवं संघ विकास के पायदान पर चढ़ता हुआ आगे बढ़ता है। आचार्य श्री भिक्षु का यह तेरापंथ धर्मसंघ आज सात समुंदर पार भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों एवं तेरापंथ धर्मसंघ के अवदानों के द्वारा अपनी विरल पहचान बनाई है। आचार्यों की प्रज्ञा, साधना, सम्यज्ञता, दूरदर्शिता, मौलिक चिंतन से चतुर्विध धर्मसंघ का आध्यात्मिक विकास हो रहा है। पांच महाव्रत, पांच समिति एवं तीन गुप्ति साधु जीवन का मूल आधार है। छद्मस्थता के कारण प्रमाद हो सकता है। अप्रमाद के प्रति जागरूकता बनी रहें। संघ में साधु साध्वी का आपसी सौहार्द, समन्वय बना रहे। एक दूसरे के संयमी जीवन में सहयोगी बनकर आत्मसाधना करते रहे इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आचार्य श्री भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण किया। साधु साध्वी की तरह श्रावक समाज के लिए भी श्रावक निष्ठा पत्र का निर्माण हुआ जो कि श्रावक को अपने कर्तव्य के

प्रति जागरूक करता है। धर्मसंघ के सदस्यों के प्रति आचार्य श्री का निष्पक्ष भाव ने ही संघ को विकास की ओर गतिमान किया है। चतुर्विध धर्मसंघ का चिंतन रहें संघ हमारा है हम संघ के है। तेरापंथ धर्मसंघ से हमें बहुत कुछ मिला है। संघ हमारा त्राण है, शरण है। हमारा दायित्व बनता है कि संघ विकास में योगदान दें जिससे संघ के ऋण से यत्किंचित उत्थण हो सके। गणणाति के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहकर धर्मसंघ की गरिमा को अपनी महिमा मानकर संघ की प्रभावना करते रहे। 162 वां मर्यादा महोत्सव के अवसर पर अपनी भीतर की आंखों से स्वयं को टटोल कर गहराई से विचार करना चाहिए कि मेरे आचार-विचार, संस्कार, व्यवहार, कार्यशैली संघ विकास में योगभूत है या नहीं? साधु लेखपत्र एवं मर्यादा पत्र को अपना सुरक्षाकवच मानकर सदैव उसके प्रति समर्पित रहे। श्रावक समाज श्रावक निष्ठा पत्र एवं आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित श्रावक सम्बोध का बार-बार परायण करता रहे।

नमन परम उपकारी, सजग साधक, सिद्धयोगी, उपशांत कषायी, मनौ वैज्ञानिक, पारखी पुरुष, सर्वोच्च ज्ञान से परिपूर्ण भगवान महावीर के परम उपासक आचार्य श्री भिक्षु को। उनकी द्वारा रचित मर्यादा साधक के लिए मील का पत्थर है।

सही दिशा देती मर्यादा

● निखिल बांठिया, बैंगलोर ●

आज के कई युवाओं के लिए मर्यादा शब्द सुनते ही थोड़ी असहजता हो जाती है। यह शब्द उन्हें ऐसा लगता है जैसे उनकी आजादी, सोच और अपने तरीके से जीने की इच्छा पर रोक लगाई जा रही हो। जिस समय में हम खुलकर जीने और अपने फैसले खुद लेने की बात करते हैं, वहाँ मर्यादा एक सहारे की जगह रुकावट जैसी लगने लगती है। ऐसा महसूस होता है कि यह बिना पूछे कुछ सीमाएँ तय कर देती है।

यह सोच यूँ ही नहीं बन जाती। बचपन से ही हम अपने आसपास अनुशासन और नियमों से जुड़ी कई बातें सुनते हैं। बड़े-बुजुर्ग अपने अनुभव बताते हैं—कितनी सख्ती थी, कितने त्याग करने पड़े, और कैसे नियमों का पालन करना जरूरी था।

ये बातें भले ही अच्छे भाव से कही जाती हों, लेकिन धीरे-धीरे मन में यह बैठ जाता है कि मर्यादा कोई भारी चीज़ है, जिसे समझने से ज्यादा निभाना पड़ता है। लेकिन यहाँ रुककर एक सवाल खुद से पूछना जरूरी है। क्या मर्यादा सच में हमें रोकने के लिए बनी है, या फिर हमने उसे सही तरह से समझने की कोशिश ही नहीं की?

इसे एक सरल उदाहरण से समझा जा सकता है। जब नदी मर्यादा में बहती है, तब वही पानी खेतों को सींचता है, हरियाली लाता है और विकास का कारण बनता है। लेकिन जब वही नदी मर्यादा से बाहर जाकर उफान पर होती है, तो जीवन देने के बजाय तबाही मचा देती है। पानी वही होता है, शक्ति वही होती है—फर्क सिर्फ उसकी दिशा और मर्यादा का होता है।

यहीं पर तेरापंथ की मर्यादा एक अलग सोच सामने रखती है। तेरापंथ में मर्यादा को किसी दबाव या मजबूरी की तरह नहीं, बल्कि समझ और विश्वास पर आधारित व्यवस्था माना गया है। मर्यादा रोकती नहीं है—वह हमारी ऊर्जा को सही दिशा देती है, ताकि हम संतुलन और समझ के साथ आगे बढ़ सकें।

स्वर्गीया साध्वी श्री मनुयशाजी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्घार

सतयुग सा हमको मिला

● मुनि कमल कुमार ●

सतयुग सा हमको मिला- भैक्षवगण सुखकार आत्मार्थी नर के लिए - आत्मोन्ति का द्वार।।

गुरु तुलसी मुखकमल से - दीक्षा की स्वीकार महाप्रज्ञ महाश्रमण की - कृपा मिली अनपार।।

मनुयशाजी ने किया - अपना बेड़ा पार सही बदना साम्य से - मन में दृढ़ताधार।।

समणी बन साध्वी बनी - गुरु आजानुसार की थी धर्म प्रभावना - निज शक्ति अनुसार।।

जन्मी थी मेवाड़ में - गंगाणे प्रस्थान बना गई है संघ में - अपना ऊँचा स्थान।।

विशदप्रज्ञा लब्धियशा - सतियों का सहयोग श्रावक गंगाशहर के - सेवा सह उपयोग।।

मनन ध्रुव ने मनुयशा - को अंतिम सहयोग दिया खूब उत्साह से - सहज मिला संयोग।।

क्रमशः करके साधना - प्राप्त करो शिव स्थान संत कमल श्रेयांस के - हैं हार्दिक अरमान।।

संयम पथ साथ में आए

● साध्वी मननयशा ●

संयम पथ साथ में आए, अब चल दिये अपनी डगर इतने जल्दी जाओगे, सोचा न कभी इस पर-2

बचपन में साथ रहे हैं, वैराग्य भावना साथ-2
मेरी चाकरी में तुमने ले लिया एक लम्बा सफर... इतने...

समणी दीक्षा में सहचर, गुरु तुलसी चरण कमल-2
साध्वी दीक्षा ले पहले बढ़ गए अग्रिम पथ पर... इतने...

शांति निकेतन में तुमने, लम्बा स्थिरवास किया-2
माताजी की जोड़ी के की दुकराई बन ठाकर... इतने...

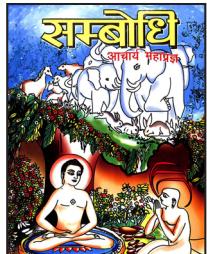
समतामय सहज सरलता नियम निष्ठा गहरी-2
कभी अनुशासन भी करते, भीतर करुणा का जिगर... इतने...

अन्तर मन के शुभ भाव, सिद्ध भी वरण करो-2
सच्चा सुख आत्म तत्व का पाए पद अजर अमर... इतने...

लय : प्रभुपाश्वर



संबोधि



परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

सप्ताह जब भी भोजन करता, सुदर्शन इस गाथा को प्रतिदिन सुनाता। सप्ताह की आदत बदल गयी, वह परिमित भोजी हो गया।

आचार्य ने उन व्यक्तियों के लिए अवमौदर्य तप का निर्देश किया है जो पित्त के प्रकोपवश उपवास करने में असमर्थ हैं, जो उपवास से अधिक थकान महसूस करते हैं, जो अपने तप के माहात्म्य से भव्य जीवों को उपशांत करने में लगे हैं, जो अपने उदर में कृमि की उत्पत्ति का निरोध करना चाहते हैं और जो व्याधिजन्य वेदना के कारण अतिमात्रा में भोजन कर लेने से स्वाध्याय के भंग होने का भय करते हैं।

ऊनोदरी के फल ये हैं-

1. इन्द्रियों की स्वेच्छाचारिता मिट जाती है।
2. संयम का जागरण होता है।
3. दोषों का प्रशमन होता है।
4. संतोष की वृद्धि होती है।
5. स्वाध्याय की सिद्धि होती है।

ऊनोदरी-यह सांकेतिक शब्द है। इसे हम केवल भोजन से ही संबंधित न करें। भोजन स्थूल है। जहां भी जिस वस्तु में मात्रा का अतिक्रमण होता हो, वहां सर्वत्र संयम की साधना है। आसक्ति के प्रवाह को अमर्यादित नहीं होने देता है, तथा क्रोध, अहंकार आदि दोषों का भी नियमन करता है।

(3) वृत्तिसंक्षेप

वृत्ति शब्द के दो अर्थ हैं-जीविका और चैतसिक प्रवृत्तियाँ। योगशास्त्र चित्तवृत्ति के निरोध का दर्शन देता है। प्रमाद, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति-ये पांच वृत्तियाँ हैं। इनका संपूर्ण निरोध करना योग का चरम लक्ष्य है। वृत्तियों के कारण चित्त शुद्ध नहीं रहता। अशुद्ध चित्त में परमात्मा का अवतरण नहीं होता।

वृत्तिसंक्षेप का अर्थ है-जीविका निर्वाह (भोजन) को विविध संकल्पों से संक्षिप्त करना। जैसे-अमुक पदार्थ मिले तो आहार करना, अमुक व्यक्ति दे तो लेना, आदि। महावीर का संकल्प प्रसिद्ध है। उन्होंने निर्णय किया कि अगर छह महीनों के भीतर संकल्प पूरा हो तो भोजन करना, अन्यथा छह महीने तक भोजन नहीं करना। भिक्षा के लिए रोज घूमते। पांच महीने पचीस दिन पूरे हो गये। संकल्प नहीं फला। छब्बीसवें दिन सब संयोग मिलने पर प्रतिज्ञा पूर्ण हुई और तब आहार ग्रहण किया।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्यियां

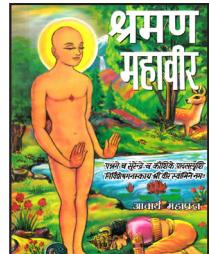
आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्यीश्री सेऊजी (गोगुंदा) दीक्षा क्रमांक 214

साध्यीश्री तपस्विनी थी। आपके द्वारा की गई तपस्या इस प्रकार है- उपवास/920, 2/4, 3/3, 4/40, 5/35, 10/1, 30/1

- सामार : शासन समुद्र -

श्रमण महावीर



विरोधाभास का वातायन

'भगवान् संस्कारों का प्रक्षालन कर रहे थे, तब तपस्या की गंगा बह रही थी। अब उनके संस्कार धुल चुके हैं। तपस्या की गंगा कृतार्थ हो चुकी है। तपस्या, तपस्या के लिए नहीं है। आप ही कहिए नदी के पार पहुंचने पर नौका की क्या उपयोगिता है?'!

'आजीवक प्रवर ! मैं फिर आपसे कहना चाहता हूं कि भगवान् के आचरण प्रयोजन के अनुरूप होते हैं। उनमें कोई विसंगति नहीं है।'

गोशालक ने आर्द्रकुमार के समाधान पर आवरण डालते हुए कहा- आर्द्रकुमार !

क्या तुम नहीं मानोगे कि महावीर बहुत भीरु हैं ?'

'यह मानने का मेरे सामने कोई हेतु नहीं है।'

'नहीं मानने का क्या हेतु है ?'

'मैं पूछ सकता हूं मानने का क्या हेतु है ?'

'जिन अतिथि-गृहों और आराम-गृहों में बड़े-बड़े विद्वान् परिव्राजक ठहरते हैं, वहां महावीर नहीं ठहरते। विद्वान् परिव्राजक कोई प्रश्न न पूछ लें, इस डर से वे सार्वजनिक आवास-गृहों से दूर रहते हैं। क्या उन्हें भीरु मानने के लिए यह हेतु पर्याप्त नहीं है ?'

'भगवान् अर्थशून्य और बचकाना प्रवृत्ति नहीं करते। वे प्रयोजन की निष्पत्ति देखते हैं, वहां ठहरते हैं, अन्यत्र नहीं ठहरते। प्रयोजन की निष्पत्ति देखते हैं, तब प्रश्न का उत्तर देते हैं, अन्यथा नहीं देते। इसका हेतु भय नहीं, प्रवृत्ति की सार्थकता है।'

आजीवक आचार्य महावीर को निरपेक्ष दृष्टि से देख रहे थे। फलतः उनकी दृष्टि में महावीर का चित्र विरोधाभास की रेखाओं से बना हुआ था। आर्द्रकुमार महावीर की दृष्टि (सापेक्षदृष्टि) से देख रहे थे। फलतः उनकी दृष्टि में प्रतिबिम्बित हो रहा था महावीर का वह चित्र जो निर्मित हो रहा था सामंजस्य की रेखाओं से।

देश, काल और परिस्थिति के वातायन की खिड़की को बन्द कर देखने वाला जीवन में विरोधाभास देखता है। यथार्थ वही देख पाता है, जिसके सामने सापेक्षता की खिड़की खुली होती है।

सह-अस्तित्व और सापेक्षता

भगवान् महावीर अहिंसा के मन्त्रदाता थे। भगवान् ने सत्य का पहला स्पर्श किया तब उनके हाथ लगी अहिंसा और सत्य का अन्तिम स्पर्श किया तब भी उनके हाथ लगी अहिंसा। चेतना-विकास के आदि-बिन्दु से चरम-बिन्दु तक अहिंसा का ही विस्तार है। वह सत्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

जीव-जगत् के सम्पर्क में अहिंसा की रेखाएं मैत्री का और तत्त्व-जगत् के सम्पर्क में वे अनेकांत का चित्र निर्मित करती हैं। भगवान् के मानस से मैत्री की सघन रशियां निकलती थीं। वे सिंह को प्रेममय और बकरी को अभय बना देतीं। भगवान् की सन्निधि में दोनों आस-पास बैठ जाते।

सह-अस्तित्व में एक छंद, एक लय और एक स्वर है। उसमें पूर्ण सन्तुलन और संगति है, कहाँ भी विसंगति नहीं है।

विसंगति का निर्माण बुद्धि ने किया है। भिन्नता के विरोध का आकार बुद्धि ने किया है। तत्त्व-युगलों का धारावाही वर्तुल है। उसमें सत्-असत्, नित्य-अनित्य, सदृश-विसदृश, वाच्य-अवाच्य जैसे अनन्त युगल हैं। इन युगलों का सह-अस्तित्व ही तत्त्व है।

भगवान् ने प्रतिपादित किया-कोई भी वस्तु केवल सत् या केवल असत् नहीं है। वह सत् और असत्-इन दोनों धर्मों का सह-अस्तित्व है। कोई भी तत्त्व केवल नित्य या केवल अनित्य नहीं है। वह नित्य और अनित्य-इन दोनों धर्मों का सह-अस्तित्व है।

गौतम भगवान् से बहुत प्रश्न पूछा करते थे। कभी-कभी वे भगवान् के जीवन के बारे में पूछ लेते थे। एक बार उन्होंने पूछा-

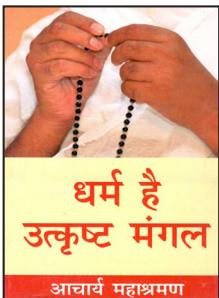
'भन्ते ! आप अस्ति हैं या नास्ति ?'

'मैं अस्ति भी हूं और नास्ति भी हूं।'

(क्रमशः)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण
आचार्यश्री तुलसी : जयाचार्य
के परिप्रेक्ष्य में



आचार्य श्री तुलसी ने अपने आचार्य-काल में तीन साध्वी-प्रमुखाओं की नियुक्तियां की-

१. साध्वी-प्रमुखाश्री झमकूजी, वि. सं. १९६३
२. साध्वी-प्रमुखाश्री लाडांजी, वि. सं. २००३
३. साध्वी-प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, वि. सं. २०२८

तेरापंथ के अन्य किसी भी आचार्य ने एक से अधिक साध्वी प्रमुखाओं को नियुक्तियां नहीं की।

आचार्य-युवाचार्य का सह नेतृत्व

श्रीमज्जयाचार्य ने वि. सं. १९२० में मुनि श्री मधवा को अपने युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया और उसके बाद प्रत्येक चतुर्मास में जयाचार्य और युवाचार्य श्री मधवा साथ में रहे।

आचार्यश्री तुलसी ने वि. सं. २०३५ में महाप्रज्ञ मुनि श्री नथमलजी को अपने युवाचार्य के रूप में मनोनीत किया और तब से आज तक प्रत्येक चातुर्मास में दोनों साथ में रह रहे हैं। जयाचार्य और युवाचार्य मधवा का १८ वर्षों तक संघ को यह नेतृत्व मिला। श्री तुलसी और श्री महाप्रज्ञ का १८ वर्षों से संघ को नेतृत्व मिल रहा है। लम्बे काल तक गुरु-आचार्य का सह-सान्निध्य संघ को मिलता रहे, यही मंगल कामना है।

नई भाषा के विद्वानों का प्रादुर्भाव

श्रीमज्जयाचार्य के समय संस्कृत के विद्वान् साधु तैयार हुए और आचार्यश्री तुलसी के समय हिन्दी और अंग्रेजी के विद्वान् साधु तैयार हुए हैं।

आचार्य भिक्षु के कुशल भाष्यकार

आचार्य भिक्षु तथा उनके सिद्धांतों को साहित्य के रूप में प्रस्तुत करने वाले प्रमुख रूप से तेरापंथ में दो ही आचार्य हुए हैं- श्रीमज्जयाचार्य और आचार्य श्री तुलसी। श्रीमज्जयाचार्य ने 'भिक्षु म्हार प्रगट्याजी भरत खेतर में' आदि गीतिकाओं के माध्यम से भिक्षु स्वामी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त की एवं 'भ्रम विध्वंसनम्' आदि ग्रंथों के माध्यम से उनके सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन किया।

आचार्य श्री तुलसी ने भिक्षु स्वामी के प्रति बहुत से भक्तिपूर्ण गीत रचे हैं। उनमें 'म्हानै सिरियारी रो संत प्यारो-प्यारो लगे' 'घणां सुहावो माता दीपांजी रा जाया' आदि प्रमुख हैं। आचार्यश्री ने आधुनिक परिपरक्ष में भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों को व्याख्यात कर उनको महान् दार्शनिक को कोटि में प्रस्तुत किया है।

अपने शासन काल में दीक्षित साध्वी का साध्वी-प्रमुखा के रूप में चयन

श्रीमज्जयाचार्य ने वि. सं. १६०८ में दीक्षार्थी गुलाबांजी को दीक्षित किया तथा वि. सं. १६२७ में उनको साध्वी-प्रमुखा के रूप में मनोनीत किया।

आचार्य श्री तुलसी ने वि. सं. २०१७ में दीक्षार्थी कलावती जी (वर्तमान में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी) को दीक्षित किया तथा वि. सं. २०२८ में उनको साध्वी-प्रमुखा बनाया। अपने शासनकाल में दीक्षित साध्वी को साध्वी-प्रमुखा बनाने का अवसर तेरापंथ के अन्य किसी भी आचार्य को नहीं मिला।

अन्तरंग विरोध

श्रीमज्जयाचार्य के समय साधु-साधिव्यों का एक बड़ा दल संघ से अलग हुआ और उनका विरोध जयाचार्य ने सहा। आचार्य श्री तुलसी के समय में भी दो बार बड़ी संख्या में साधु-साधिव्यों संघ से अलग हुए। उनके निमित्त से होने वाला संघर्ष आचार्य श्री तुलसी ने सहा।

उत्सवों का प्रारंभ

जयाचार्य ने पट्टोत्सव (वर्तमान आचार्य का आचार्यपदारोहण दिवस), चरमोत्सव (भिक्षु स्वामी का स्वगरोहण दिवस, भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी) एवं मर्यादा महोत्सव (माघ शुक्ला सप्तमी) को उत्सव के रूप में मनाना शुरू किया।

आचार्य श्री तुलसी ने तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह, जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह, कालू जन्म शताब्दी समारोह आदि शताब्दी समारोहों को उत्सवों के रूप में मनाया।

इस प्रकार श्रीमज्जयाचार्य और युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के महान् जीवन के विभिन्न पहलुओं में समानता उपलब्ध होती है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुख्यपत्र



तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>
समाचार प्रकाशन हेतु
abtyppt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री अमोलकचंद्रजी (राजलदेसर) दीक्षा क्रमांक 478

मुनिश्री द्वारा की गई तप की समग्र तालिका इस प्रकार है- उपवास/1400, 2/90, 3/23, 4/9, 5/18, 7/1, 8/1, 9/2, 10/1। तप दिन 1718 जिनके 4 वर्ष 8 महीने 18 दिन होते हैं। मुनिश्री ने 22 वर्ष लगातार एकासन किये। कई वर्षों तक निरंतर प्रहर की। 38 वर्षों तक रात्रि में एक पछेवड़ी में रहकर झीत सहन किया। उनी वस्त्र ओढ़ने का त्याग था।

- साभार : शासन समुद्र -



तेरापंथ टाइम्स

कांशीय समाचारों का साप्ताहिक मुख्यपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

- संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुख्यपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
- समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
- कृपया किसी भी ज्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
- समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर ब्रॉडस्पष्ट अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

कुबुद्धि ही सब दुख मुसीबतों का कारण

चंडीगढ़।

बुरी बुद्धि ही सभी कष्टों और समस्याओं का मूल कारण है, क्योंकि गलत सोच, लालच, अज्ञानता और गलत निर्णय ही हमें दुःख की ओर ले जाते हैं, जो कि बुद्ध और अन्य दार्शनिक विचारों से मेल खाता है, जहाँ अज्ञानता को ही दुःख का कारण माना जाता है।

समस्त दुखों की जननी कुबुद्धि है इसके मायाजाल से बचकर रखना चाहिए कब और किस समय यह व्यक्ति के मन को भ्रमित कर दे और उसके बाद दुखों का पहाड़ टूटने से कोई नहीं रोक सकता।

ये शब्द मनीषी संत मुनि विनयकुमार जी आलोक ने सैकटर-24 सी अनुब्रत भवन तुलसीसभागर में सभा को

संबोधित करते हुए कहे। इसके विपरित समस्त सुखों और शांति की जननी सद्बुद्धि है।

कुबुद्धि हमें आनंद से वंचित करके नाना प्रकार के क्लेश, भय और शोक-संतापों में फंसा देती है। जब तक यह कुबुद्धि रहती है तब तक कितनी ही सुख सामग्री प्राप्त होने पर चैन नहीं मिलता।

एक चिंता दूर नहीं हो पाती कि दूसरी सामने आ खड़ी होती है। इस विषम स्थिति से छुटकारा पाने के लिए सद्बुद्धि जरूरी है। इसके बिना शांति मिलना किसी भी प्रकार संकाव नहीं। संसार में जितने भी दुख हैं, कुबुद्धि के कारण हैं। लड़ाई-झगड़ा, आलस्य, दरिद्रता, व्यसन, कुसंग आदि के पीछे मनुष्य की दुर्बुद्धि ही काम करती है।

162वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष तेरापंथ की शान : मर्यादा महोत्सव

● मुनि कमलकुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित और अनुशासित धर्मसंघ है। इस धर्मसंघ के प्रथम आचार्य भिक्षु हुए जिन्होंने वि.स. 1817 आसाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के दिन राजस्थान के मेवाड़ प्रान्त में केलवा नगर में भाव दीक्षा स्वीकार कर इसकी स्थापना की। वि.स. 1832 में प्रथम मर्यादा पत्र लिखा और अपने संघ के उत्तराधिकारी श्री भारीमालजी का चयन किया। समय समय पर अनेक मर्यादा पत्र लिखे अंतिम मर्यादा पत्र वि.स. 1859 माघशुक्ला सप्तमी को लिखा और वि.स. 1860 भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी के दिन मारावाड़ के सिरियारी नामक गांव में आपने संथारे पूर्वक अंतिम श्वास लिया। आचार्य भिक्षु एक महान, साधक थे उन्हें आगमों का गहरा ज्ञान था उन्होंने साधुओं के शुद्ध संयम साधुत्व के लिये जो मर्यादाएं बनाई उनको संघ का आधार मानकर उन्हीं के चतुर्थ पट्ठधर श्रीमद्भज्याचार्य एक दूरदर्शी आचार्य हुए उन्होंने संघ विकास के लिए धर्मसंघ को तीन उत्सव प्रदान किये। पट्ठोत्सव मर्यादामहोत्सव और चरमोत्सव वर्तमान आचार्य का पट्ठोत्सव प्रथम आचार्य का चरमोत्सव और माघ आचार्य का चरमोत्सव और माघ

शुक्ला सप्तमी जो अंतिम मर्यादा पत्र की तिथि है उस दिन माघमहोत्सव मनाया जाये उनकी परिकल्पना के आधार इस धर्मसंघ में उत्सवों की शुरूवात हुई और पूरा धर्मसंघ केवल एक मर्यादा महोत्सव को छोड़कर निरंतर उत्सवों को बड़ी ही श्रद्धा के साथ इसे मना रहा है। एक मर्यादा महोत्सव के अवसर पर राज्य के राजा गंगासिंहजी का स्वर्गवास हो गया था पूरे राज्य में शोक का माहोल था अतः उसे विधिपूर्वक नहीं मनाया गया। यह उत्सव त्रिदिवसीय मनाया जाता है जिसकी तीन तिथियां अनुक्रम से इस प्रकार हैं। पांचम के दिन सबसे पहले वृद्ध रुग्ण ग्लान साधु साधियों के सेवा केन्द्रों की नियुक्तियां की जाती हैं जिससे उन स्थविरों की व्यवस्थित सेवा परिचर्या हो सके। जिस परिवार समाज और देश में सेवा का क्रम चलता है वहाँ अमन चैन का वातावरण बना रहता है और आज हम साक्षात् यह अनुभव कर रहे हैं। छठ के दिन मर्यादा अनुषासन संबंधी विषेष प्रवचन होते हैं सप्तमी के दिन बड़ी हाजरी होती है अर्थात् आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित जिससे यह संघ दीर्घ जीवी बना रहे हैं।

विकास की राह चलते अध्यात्म को अपनाएं

नोखा। स्वस्थ मन, स्वस्थ चिंतन, स्वस्थ तन की अनुग्रेक्षा करें। कषाय कम करें, परिवार समाज में प्रेम की धारा बढ़ाएं। अनासक्ति की साधना करें। बीज मंत्रों का जाप करवाते हुए शासन गैरव साध्वी राजीमती ने नव वर्ष प्रारंभ पर मंगल पाथरे प्रदान किया। साध्वी प्रभात प्रभात जी ने सामूहिक लोगस्स व उपर्सग्हर स्तोत्र भगवान महावीर व भिक्षु स्वामी का जाप करवाया।

तेरापंथ युवक परिषद नोखा द्वारा नव वर्ष के कैलेंडर की प्रति साध्वी श्री जी को झेंट की गई। तेयुप अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, उपाध्यक्ष पुलकित ललवानी, सभा मंत्री मनोज धीया, महिला मंडल अध्यक्ष प्रति मरोठी, जोगवरपुरा सभा अध्यक्ष बाबूलाल द्वारा नव वर्ष कैलेंडर का विमोचन किया गया।

गुरुदेव तुलसी के अवदान जन जन के कल्याण के लिए थे

गंगाशहर।

आचार्य श्री तुलसी की मासिक पुण्यतिथि के अवसर पर आशीर्वाद भवन में उद्घोषन देते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी स्वामी ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी संत परंपरा के उज्जवल नक्षत्र थे, जीवन पर्यंत उन्होंने स्वयं के आत्मकल्याण के साथ जन जन के कल्याण के लिए अथक श्रम किया, वे मानव मात्र में नैतिकता और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए लगे रहे इसलिए उनके अवदान भले अणुव्रत हो, जीवन विज्ञान हो, प्रेक्षा ध्यान हो चाहे नया मोड़ हो ये सभी उस समय की परिस्थिति और कुरुक्षेत्रों को दूर करने के लिए आम आदमी के हित के लिए थे। आचार्य तुलसी का आचार्य काल

तेरापंथ धर्मसंघ में आज तक सबसे लम्बे समय का रहा है और उनके अवदानों की श्रेष्ठता भी बहुत लम्बी रही है। मुनि श्री ने कहा कि भगवान् महावीर ने बताया कि जिसका जन्म होता है वह पृथ्वी को भी प्राप्त होता है। भगवान् महावीर ने कहा कि संयमी जीवन सर्वश्रेष्ठ होता है। असंयमी का क्षण भर भी जीना कष्टकारी होता है। मुनि श्री ने कहा कि 'समया धम्म मुदाहरे मुण्डी' अर्थात् समता में ही धर्म है। लाभ अलाभ, सुख- दुख में सम भाव रखना चाहिए। जब व्यक्ति का अंतिम समय यह दृष्टिगोचर होना लगने लग जाये उस समय परिवार के सदस्यों को जागरूक व मनोबल से त्याग, तपस्या, ध्यान स्वाध्याय व संथारे संलेखना की ओर आगे बढ़ना चाहिए।



नव वर्ष के उपलक्ष में पूज्यप्रवर द्वारा कंठस्थ करने हेतु प्रेरित पंच परमेष्ठी से सम्बद्ध गीत

लय : आसावरी

प्रभु ! म्हारै मन-मदिर में पधारो,
म्हारो स्वागत नाथ ! सिकारो,
करूं पूजन प्राण-पिया रो,

प्रभु ! म्हारै मन-मदिर में पधारो ॥
चिन्मय नै पाशाण बनाऊं, जो परिचय जड़ता रो ।
स्वयं अमल अविकार प्रभू तो, स्नान कराऊं क्यारी ?

फल फूलां री भेंट करूं के ? जीवन अर्पण म्हारो ।
अगर तगर, चन्दन के चरचू ? कण-कण सुरभित थांरो ।

नहीं ताल कंसाल बजाऊं, धूप न दीप उजारो ।
केवल लयमय स्तवना गाऊं, ध्याऊं ध्यान गुणां रो ॥

मन चंचल है और मलिन है, ओ है धीठ धुतारी ।
सब कुछ है तब ही तो तेहूं सकरुण दृष्टि निहारो ॥

वीतराग हो, समदर्शी हो, समता-रस संचारो ।
'तुलसी' तारण-तरण तीर्थपति, आपणो विरुद विचारो ॥

रचियता : आचार्य श्री तुलसी

लय : मैं ढूँढ़ फिरी जग सारा

पांचू परमेष्ठी प्यारा,
जीवन धन सब कुछ म्हारा, पांचू परमेष्ठी प्यारा ।
है असहायां रा सहारा, पांचू परमेष्ठी प्यारा ॥

सर्वोच्च अर्हता धारी, अरहंत अमल अविकारी ।
तीर्थकर त्रिभुवन तारी, प्रवही प्रवचन री धारा ॥

है सिद्ध सिद्धपद-वासी, अज अजरामर अविनाशी ।
परमात्मा परम प्रकाशी, काटी करमा री कारा ॥

धरमाचारज धृतिधारी, निष्कारण पर-उपकारी ।
लाखां री नैव्या तारी, भगवान कहूं भगतां रा ॥

है उपाध्याय अविकारी, गणिपिटका रा भंडारी ।
श्रुतदाता संकट-हारी, जिनशासन-गगन-सितारा ॥

मुनिवर जग-ममता त्यागी, समता री प्रतिमा सागी ।
है पाप-भीरु वैरागी, 'तुलसी' मनमोहनगारा ॥

लय : आए आए जी बदरवा

देवो देवोजी डगर वर, सिद्धि नगर चढ़ ज्यांवूं।
थारो पलक-पलक, मैं अपलक ध्यान लगांवूं।
किं मारग स्यूं श्रीजिनवरजी ! अपणै धाम सिधावो ?
समदर्शी सर्वज्ञ परम-प्रभु, परमात्म पद पावो ।
दरसावो, मैं भी तिन पथ निजर टिकाऊं ॥
अक्षय अरुज अनंत अचल अज अव्याबाध कहावो,
क्यूं कर सहजानन्द-समन्दर में विलीन हो ज्यावो ?
बतलावो, मैं भी बो ही क्रम अपणावू ॥
निकट अनंत अलोक पड़यो, क्यूं लोकांत थिति ठावो ?
पैतालीस लाख जोनन में, सारा किया समावो ?
समझावो, मैं स्वयमेव समझणो चावूं ॥
एकर भी क्षण-भर भी साहिब ! साक्षात्कार करावो,
तो मन चाह्वा फलै मनोरथ, लायो हृदय उम्हावो ।
उमगावो, पर नहिं मन घबराहट मचाऊं ॥
अनुपमेय अज्ञेय सच्चिदानन्द दया दिखलावो,
साद्यनंत भगवंत हंत ! भगता नै क्यूं तरसावो ?
सरसावो, 'तुलसी' सिद्ध स्तवन सुणाऊं ॥

लय : लें नये निर्माण का व्रत

धरमाचारज ! मुझ तारो,
मैं लीन्हो शरण तुम्हारो ।
है और न कोई चारो ॥

भवसागर है अथग अमित जल, नहिं है निकट किनारो ।
जबर-ज्वार रै झोला माही, बीत्यों जाय जमारो ॥

साश्रव आतम-नाव पुराणी, पल-पल जल पेसारो ।
डगमग-डगमग डोलै था बिन, कुण है खेवणहारो ?

डगर-डगर में मगर भयंकर, पग-पग पर भय बारी ।
औ तूफान उठे हडबड़कै, धड़कै दिल दुनियां रो ॥

आय लगी अब बीच भंवर में, मन-मांझी मतवारो ।
इण बिरिया में इण दरिया में, साहिब ! शरणो थांरी ॥

प्रतिनिधि आप प्रथम-पद का हो, आर न पार गुणां रो ।
करुण पुकार सुणो सानुग्रह 'तुलसी' पार उतारो ॥

लय : नाथ ! कैसे कर्म को फंद छुड़ायो

म्हारो अभिवादन स्वीकारो,
उपाध्यायजी ! धो जीकारो, म्हारो अभिवादन स्वीकारो ।
स्वीकारो अस्वीकारो, अभिवादन व्यर्थ न म्हारो ॥

परमेष्ठी-पंचक में प्रभुवर ! चोथो पद है थारी ।
नमो उवज्ञायाणं रो जप, लागै प्यारो प्यारो ॥

जिन-शासन रो बड़ो महकमो, साहिब ! आप संभारो ।
घट-घट घाली ज्ञान-रोशनी, हर अज्ञान-अंधारी ॥

आगम एक अखूट खजानो, जो अध्यात्म कथा रो ।
सदा भणावो शिष्य संघ नै, बाधी मधुर मथारो ॥

श्रुत-उपासना संघ-शासना रो सम्बन्ध सदा रो ।
उपाध्याय आचारज जोड़ी, अविचल ज्यू ध्रुव-तारो ॥

पांचू अंग नमत प्रभु-चरण, निश्चित ही निस्तारो ।
तिण में 'तुलसी' बणै सहारो, थारी एक इशारो ॥

लय : असल दुपट्टो फूल गुलाब

दोनूं हाथ जोड़कर करूं, साधु रै चरण में परणाम,
चरण में परणाम नाम शिर, करता पाप पलावै ।
पावै अजरामर शिव-धाम ॥

आत्म-साधना करै निरन्तर, बो ही साध कहावै ।
भावै विमल भाव अविराम ॥

पांच महाव्रत करण-जोग-जुत, आजीवन सुध पालै ।
भालै शिव-मग आदूं याम ॥

निज जीवन-धन गुरु-अनुशासन, निशदिन शिर धर विचरै ।
करणी करै सदा निष्काम ॥

पर-उपकार परायण पल-पल, भल उपदेश सुणावै ।
पावै प्रतिपल परमाराम ॥

अप्रतिबन्ध-विहारी भारी, निज पर आतम तारै ।
सारै 'तुलसी' वाछित काम ॥

आध्यात्म की लहर

● साध्वी कनकरेखा ●

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिया कनकरेखा जी आदि ठाणा ४ के त्रिवर्षीय पंजाब यात्रा में संघ प्रभावना करते हरियाणा होते हुए राजस्थान सीमा में प्रवेश किया। संगरिया मंडी में दस दिवसीय प्रवास में संघ प्रभावना को बढ़ाने के अनेक कार्यक्रम हुए।

प्रेक्षाध्यान वर्कशॉप - दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान वर्कशॉप में अनेक भाई-बहन खुले सत्र के साथ संभागी बनें। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गुणप्रेक्षाजी साध्वी संवरविभाजी व साध्वी हेमंतप्रभा जी के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ। साध्वी

बिजनेस ऑनेस्टी सेमिनार- व्यापार मंडल संगरिया के तत्वावधान में

कनकरेखाजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा वर्तमान की ज्वलंत रहस्य है टेंशन। टेंशन फ्री लाईफ के लिए प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोगों को समझें और जीवन में अपनाएं। जीवन का सच्चा आनंद प्राप्त करें। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अशांत विश्व को शांति का संदेश देने प्रेक्षाध्यान का अभिनव आयाम दिया।

साध्वी हेमंतप्रभा जी ने श्वास प्रेक्षा व कार्योत्सर्ग का प्रयोग करवाया। कुशल संचालन साध्वी संवरविभा जी ने किया। बिजनेस ऑनेस्टी सेमिनार-व्यापार मंडल संगरिया के तत्वावधान में

सबसे बड़ी संपदा है- नैतकता। व्यापार मंडल का श्रृंगार बने सदाचार। साध्वी हेमंत प्रभा जी ने मंगल गीत का संगान किया। सभी को साध्वीश्री ने नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

कैसे रहें परिवार खुशहाल
कार्यशाला- साध्वीश्री जी ने अपने वक्तव्य में अध्यात्म परिषद को संबोधित करते हुए कहा- समाज की एक ईकाई है परिवार। पारस्परिक सम्बन्धों में जहां विनय-वात्सल्य का रिश्ता होता है, रिश्तों में मिठास होता है तो हर हाल में परिवार का हर सदस्य मस्त रहता है।

अलमस्त रहता है। घर का हर व्यक्ति अपने दायित्व को समझें और उसका सम्पर्क आचारण करे। जिससे परिवार में ही स्वर्ग का नजारा देखा जा सकता है। बशर्ते हम दूसरों की कमियों को लेटे गे करना सीखें।

अच्छाईयों को एकसेप्ट करें ताकि परिवार में खुशहाली का नजारा देखा सकें। सहना हमारे जीवन का श्रृंगार बन जाएं। साध्वी हेमंतप्रभा जी ने सुमधुर गीत के साथ परिवार खुशहाली पर स्वर प्रस्तुत किया। साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने अपने विचार रखें।



संक्षिप्त खबर

Kishore Fiesta का आयोजन

बारडोली। तेरापंथ किशोर मंडल बारडोली द्वारा तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में Kishore Fiesta का आयोजन किया गया। जिसमें Treasure Hunt, Bachpan ke Foods, Bachpan ke Khel, One Minute Game, Award Ceremony, Bhakti Sandhya, एवं अन्य कार्यक्रम रखा गया।

कार्यक्रम में तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक जयेश मेहता, सभा अध्यक्ष महावीर दक, तेयुप अध्यक्ष राहुल सामरा, अभातेयुप के सदस्य रैनक सरणोत एवं TKM AXIS के Executive Blue Brigade Member उत्सव मेहता, अंकुर बाफना की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मान समारोह

चेन्नई। सभा अध्यक्ष अशोक खतंग ने अपने स्वागत वक्तव्य में उपस्थित ज्ञानशाला परिवार का हार्दिक अभिनंदन किया, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका अनीता चोपड़ा एवं सह-संयोजिका कविता रायसोनी ने ऑनलाइन ज्ञानशाला गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हुए प्रशिक्षकों को करणीय कार्यों के संबंध में प्रेरित किया। ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड ने अपने उद्घोषन में ज्ञानशाला को और अधिक ऊँचाइयों तक पहुँचाने हेतु संकल्पबद्ध प्रयास करने का आह्वान किया।

इस परिवार से लगभग 1000 से अधिक सदस्य प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में चेन्नई ज्ञानशाला की 25 शाखाओं की लगभग 160 प्रशिक्षकाओं का क्रमबद्ध रूप से मंचीय सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सभा मंत्री गणेंद्र खांटेड ने प्रस्तुत किया।

2026 के अणुव्रत कैलेंडर का लोकार्पण

जसोल। बैनर विमोचन के साथ 2026 के अणुव्रत कैलेंडर का लोकार्पण अणुव्रत विश्व भारती के सहमंत्री उमेन्द्र गोयल, जयपुर, अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक जिनेन्द्र कोठारी जोधपुर, राज्य प्रभारी जयपुर संभाग की रीना गोयल, राज्य प्रभारी जोधपुर संभाग डॉक्टर सुधा भंसाली द्वारा किया गया।

54 दिवसीय जप-तप-महायज्ञ का आयोजन

अहमदाबाद। अखंड जप-तप-महायज्ञ के पावन अवसर पर, तेरापंथ युवक परिषद, अहमदाबाद पूर्व ने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन में 54 दिवसीय अखंड जप-तप-महायज्ञ का आयोजन किया। इस महायज्ञ में तेरापंथ युवक परिषद, अहमदाबाद पूर्व को 108 घंटे जाप का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसमें 'ॐ भिषु ॐ भिषु ॐ, जय तुलसी जय तुलसी जय' का जाप किया गया। यह जाप क्रम शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी के सानिध्य में तेरापंथ भवन कांकरिया मणिनगर में आयोजित किया गया।

विकास की राह चलते अध्यात्म को अपनाएं

नोखा। स्वस्थ मन, स्वस्थ चिंतन, स्वस्थ तन की अनुप्रेक्षा करें। कषाय कम करें, परिवार समाज में प्रेम की धारा बढ़ाएं। अनासक्ति की साधना करें। बीज मंत्रों का जाप करवाते हुए शासन गौरव साध्वी राजीमती ने नव वर्ष प्रारंभ पर मंगल पाथेय प्रदान किया। साध्वी प्रभात प्रभात जी ने सामूहिक लोगस्स व उपसर्गहर स्तोत्र भगवान महावीर व भिक्षु स्वामी का जाप करवाया। तेरापंथ युवक परिषद नोखा द्वारा नव वर्ष के कैलेंडर की प्रति साध्वी जी को भेंट की गई। तेयुप अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, उपाध्यक्ष पुलकित ललवानी, सभा मंत्री मनोज घोया, महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति मरोठी, जोरावरपुरा सभा अध्यक्ष बाबूलाल द्वारा नव वर्ष कैलेंडर का विमोचन किया गया।

नव वर्ष पर वृहद मंगल पाठ एवं विविध आयोजन

गुंटूर, आंध्रप्रदेश

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण जी के शिष्य मुनि मोहजीत कुमार के सानिध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुंटूर द्वारा आयोजित नववर्ष आध्यात्मिक अनुष्ठान का उपक्रम नमस्कार महामंत्र के साथ सिद्ध स्तवन के संगान से प्रवर्धमान किया गया।

मुनि मोहजीत कुमार ने मंत्राराधक विशाल परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि इस शताब्दी के रजत वर्ष का समापन के अवसर पर सन् और कलेन्डर बदलने के साथ जीवन की प्रत्येक क्रियाकलापों को रजत सम उजली बनाने का प्रयास करें। नव वर्ष पर संकल्प करें कि जीवन की हर प्रकृति संयमित और सात्त्विक हो। शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा का विकास हो।

जीवन का हर पल ऊर्जावान-मंगलमय हो। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा - मानव को नव्यता पसंद है। हर चीज अप्रेडेड और नई होनी चाहिए। पर यह नव्यता की चाह सिर्फ बाहरी वस्तुओं के लिये ही ना हो अपितु हम अपने आप में भी

नयापन लाएं। नववर्ष के अवसर पर हम ऐसे संकल्प ग्रहण करे जो हमें हमारे नए स्वरूप को डिस्कवर करने और बेहतर भविष्य के निर्माण में योगभूत बने।

विजयनगर, बैंगलोर

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयम लता जी ने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विजयनगर के तत्वावधान में अर्हम भवन में आयोजित 'नव वर्ष नव संकल्प' एवं वृहद मंगल पाठ कार्यक्रम का शुभारंभ अनेक मंत्रों के उच्चारण के साथ करते हुए कहा नव वर्ष का स्वागत ऐसे नव संकल्प के साथ करें जो जीवन की दिशा और दशा बदल कर सफलता की नई इबादत लिख सके। साध्वी श्री जी ने कहा आज के दिन ही नहीं, हर दिन नया सूर्य उदित होता है ऐसे में हर दिन को नया मान नई प्रेरणा के साथ नई शुरुआत करें।

व्यक्ति हर कार्य जोश के साथ प्रारंभ करता है पर कुछ समय बाद विभिन्न कारणों से शिथिल पड़ जाता है। लेकिन मंजिल को पाना है तो निरंतर चलना होगा। समय सबके पास एक बराबर है, जरूरत है समय के सुव्यवस्थित विजयनगर द्वारा नव वर्ष 2026 के नियोजन एवं संकल्प चेतना के जागरण कैलेंडर का अनावरण किया गया।

शिशु संस्कार बोध की वार्षिक परीक्षा का आयोजन

जलगांव। ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के निर्देशानुसार वर्ष 2026 की 'शिशु संस्कार बोध' वार्षिक परीक्षा का आयोजन तेरापंथ सभा के अंतर्गत ज्ञानशाला द्वारा अणुव्रत भवन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ज्ञानशाला शेष महाराष्ट्र की सह-आंचलिक संयोजक एवं महिला मंडल अध्यक्षा विनीता समदिर्या द्वारा बच्चों को मंगलपाठ का श्रवण कराया गया।

42 ज्ञानार्थी बच्चों एवं 10 प्रशिक्षकाओं की उपस्थिति में ज्ञानशाला की वार्षिक परीक्षा सुचारू एवं अनुशासित वातावरण में संपन्न हुई।

सामाजिक सेवा कार्य

अहमदाबाद। मकर संक्रान्ति के अवसर तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद पूर्व द्वारा खुशियां बांटने का अभियान कार्यक्रम छपरा गांव में आयोजित किया गया। अध्यक्ष नलिन दुग्ध ने संस्था के बारे में गांव वासियों को जानकारी दी एवं नशा मुक्त जीवन जीने के प्रेरणा दी। उसके पश्चात 100 से अधिक गांववासियों में राशन की सामग्री, कपड़े आदि परिषद के सदस्यों द्वारा वितरित किए गए।

उदयपुर। तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर साथियों द्वारा सैलाना गांव (झाड़ोल तहसील) में 200 जरूरतमंद परिवारों को नए कंबल बांटे गये। कंबल वितरण के इस कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरड़िया ने समस्त ग्रामवासीयों को नशामुक्त जीवन के लिए प्रेरित किया और नशा नहीं करने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम का संयोजन तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व सदस्य मुकेश कदमालिया द्वारा किया गया।

उत्तर कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तीनों आयामों - सेवा, संस्कार, और संगठन के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, उत्तर कोलकाता द्वारा कंबल वितरण बाबूघाट मेला में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस आयोजन में लगभग 125 कंबल का वितरण किया गया।

अहमदाबाद। अनलॉक हैपीनेस 5.0 के अंतर्गत नगर निगम के स्वच्छता कर्मियों के लिए Sweet Distribution कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ किशोर मंडल अहमदाबाद द्वारा किया गया। सेवा-कार्य के अंतर्गत अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के लगभग 350 स्वच्छता कर्मचारियों को Sweet Boxes वितरित किए गए।



अभिनव सामायिक फेस्टिवल पर विविध आयोजन

बायतु

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया गया।

तेयुप अध्यक्ष गौतम चौपड़ा ने बताया सम्पूर्ण भारत में अभावेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत के नेतृत्व में एक समय, एक साथ, एक सामायिक, एक संदेश की भावना को साकार करते हुए सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया गया है। यह आयोजन उत्सव विश्व मैत्री का के रूप में मनाया गया जिसमें बायतु परिषद ने सहभागिता दर्ज की।

नोखा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद नोखा ने वर्ष के अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन किया। शासन गौरवसाधी राजीमती जी के सान्निध्य में लगभग 75 सामायिक हुई। शासन गौरव साधीश्री राजीमती जी ने बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। युवा पीढ़ी सामायिक साधना से जुड़कर शुभ भविष्य का निर्माण कर रही है। उक्त विचार व्यक्त करते हुए साधीश्री जी ने सबको सामायिक करने की प्रेरणा दी। साधीविनीतयशाजी ने विधिवत अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया जिसमें ध्यान व जप का भी प्रयोग करवाया गया।

साधीश्री के मार्गदर्शन में आयोजन अनुशासित एवं प्रेरणादाई वातावरण में संपन्न हुआ। युवकों सहित लगभग 60 श्रावक, श्राविकाओं ने अभिनव सामायिक का प्रयोग उत्साह व जागरूकता पूर्वक किया।

केसिंगा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक सामायिक फेस्टिवल (उत्सव विश्वमैत्री का) का आयोजन स्थानीय श्री महावीर जैन भवन केसिंगा में स्थानकवासी जैनाचार्य प्रवर 1008 श्री विजयराजजी म. सा की सुशिष्या विदुषी महासती पूज्या वैभवश्री जी म. सा आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में मनाया गया। इस कार्यक्रम में जैन परंपरा के केसिंगा में उपस्थित तेरापंथी, स्थानकवासी एवं दिगंबर समाज के लगभग 144 श्रावक श्राविकाओं ने उपस्थित होकर एवं सामायिक कर समाज में जैन एकता का एक बहुत ही दुर्लभ परिचय दिया।

बडोदरा

आचार्य श्री महाश्रमणजी की

मणिडया

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् मणिडया द्वारा नववर्ष पर अभिनव सामायिक फेस्टिवल (उत्सव विश्व मैत्री का) का भव्य आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन के प्रांगण में युग्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साधी पुण्ययशा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साधी पुण्ययशा जी ने कहा - जैन श्रावक की साधना का एक उपक्रम है सामायिक। सामायिक में समता की आत्मानुशासन की साधना की जाती है। एक मुहूर्त तक पापकारी प्रवृत्तियों को न करने का संकल्प, त्याग व्यक्ति की आधारत्म साधना में लीन हो जाता है। जाप पूर्ण होने पर समणी निर्देशिका विपुल प्रज्ञाजी और समणी आदर्श प्रज्ञाजी ने नवकार मंत्र की गीतिका का संगान किया। अंत में अपने उद्घोधन में नवकार मंत्र का महत्व बताते हुए मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उदयपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, उदयपुर द्वारा 'अभिनव सामायिक फेस्टिवल' कार्यक्रम का आयोजन महाप्रज्ञ विहार, भुवाणा में किया गया। यह कार्यक्रम प्रातः 9:00 बजे नवकार मंत्र से प्रारम्भ हुआ जो 10:00 बजे संपन्न हुआ। सामायिक के पश्चात तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए अधिक से अधिक सामायिक करने की प्रेरणा दी। मैं हूँ सामायिक साधक व मंत्र दीक्षा के राष्ट्रीय प्रभारी अजीत जी छाजेड़ ने लोगों को अध्यात्म और जप तप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

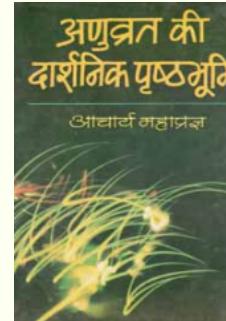
बालोतरा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत के अनुसार यह कार्यक्रम पूरे विश्व में मनाया गया परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासन श्री सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में एक ही समय पर देश और विदेश के कई स्थानों के साथ बालोतरा में भी आयोजित हुआ।

देश विदेश में एक साथ आयोजित सामूहिक सामायिक यह संदेश देगा कि अध्यात्म ही समाज को सकारात्मक एवं संतुलित दिशा प्रदान कर सकता है। तेरापंथ युवक परिषद् बालोतरा के अध्यक्ष संदीप रेहड़, परिषद् मंत्री राजेंद्र कुमार वैदमुथा ने अभिव्यक्ति प्रेषित की।

बोलती किताब

अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि



आज के संदर्भ में नैतिकता सबसे अधिक बहस का विषय बन चुकी है। तकनीक, बाज़ार और उपभोक्तावादी सोच ने मूल्य-व्यवस्था को चुनौती दी है। परिणामस्वरूप नैतिकता की परिभाषाएँ और भी उलझ गई हैं। पुरानी सामाजिक मर्यादाएँ अब उपयोगितावादी दृष्टि से अंकी जाने लगी हैं। ऐसे परिवर्तित समय में यह प्रश्न लगातार उठता है कि क्या आधुनिक समाज नैतिक आधारों के बिना विकास और स्थिरता की राह पर आगे बढ़ सकता है?

इसी मूलभूत दृष्टि के साथ प्रस्तुत पुस्तक में अणुव्रत और आध्यात्मिक समत्व के आधार पर नैतिकता की चर्चा की गई है। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत अंदोलन के माध्यम से मानवीय संवेदना, आत्मिक शुचिता और संयम का मार्ग सुझाया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भौतिकता और अध्यात्म विरोधी धारणाएँ नहीं, बल्कि परस्पर पूरक शक्तियाँ हैं। भौतिक साधनों के बिना जीवन संभव नहीं और आध्यात्मिकता के बिना मानसिक संतुलन और नैतिक चेतना भी संभव नहीं।

यह पुस्तक समकालीन संदर्भों में नैतिकता के संकट, मूल्यों के क्षणण और आध्यात्मिक आधारों पर उसके पुनर्निर्माण की राह प्रस्तुत करती है। संपादन प्रक्रिया में मुनि दुलहराजी व मुनि धनंजयकुमारजी का निष्ठापूर्वक योगदान रहा है। वर्तमान उथल-पुथल भरे सामाजिक परिवेश में ऐसी कृति नैतिकता पर मानवीय दृष्टिकोण को नए सिरे से विचारने का अवसर प्रदान करती है और समाज को शाश्वत नैतिक-मींव की ओर लौटने की प्रेरणा देती है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें:
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 | <https://books.jvbharati.org> | books@jvbharati.org

तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का हुआ आयोजन

बीकानेर।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष (भिक्षु चेतना वर्ष) के ऐतिहासिक अवसर पर तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन तुलसी साधना केंद्र, बीकानेर में सम्पन्न हुआ।

उपासक युवक रत्न राजेंद्र सेठिया मुख्य प्रशिक्षक के रूप में पधारे, सर्वप्रथम शासनश्री साधी श्री मंजू प्रभा जी शासनश्री साधी श्री कुंथुश्री जी ने कार्यशाला के प्रारंभ में तेरापंथ के उद्घव के बारे में बताया। महिला मंडल

व कन्या मंडल ने मंगला चरण, साधी वृन्द ने गीतिका प्रस्तुत की। लगभग 110 भाई-बहिनों की उपस्थिति के साथ शुरू हुई।

सभा के अध्यक्ष सुरपत बोथरा ने आभार ज्ञापित किया। वरिष्ठ श्रावक पारस छाजेड़, इंद्रचंद्र सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष दीपिका बोथरा, मंत्री रेणु बोथरा ने सैथिया से पधारे उपासक प्रकाश सुराणा, गंगशहर से पधारे उपासक अनिल बैद और बहिन कनक प्रभा जी का पताका पहनाकर अभिनंदन किया।

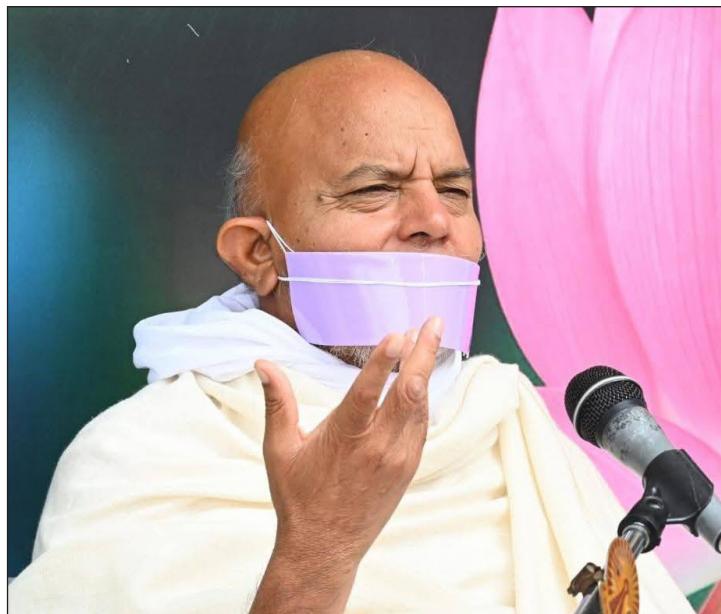
ईमानदारी के मार्ग पर आगे बढ़ने का रहे प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

तबीजी।

06 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण भीषण सर्दी में अपनी धबल सेना के साथ लगभग 14 किमी का विहार कर तबीजी में स्थित कच्छावा रिसोर्ट में पधारे। प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित जनता को अमृत देशना प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि हम यात्रा में तीन बातें बताते हैं—सद्ग्रावना, नैतिकता और नशामुक्ति।

सद्ग्रावना यानी सबके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना। जाति, संप्रदाय, राजनीतिक दल आदि की भिन्नता के आधार पर लड़ाई-झगड़ा, दंगा-फसाद, हिंसा-हत्या आदि में नहीं जाना चाहिए।



सबके साथ सौहार्द का भाव या अवैर की भावना रखना ही सद्ग्रावना है। नैतिकता अर्थात् ईमानदारी। नशामुक्ति यानी शराब, सिगरेट, गुटखा आदि अहितकर

वस्तुओं से बचकर रहना।

नैतिकता और ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। झूठ, कपट और चोरी—ये ईमानदारी में बाधक तत्व हैं। जो व्यक्ति

इन तीनों से बचकर रहता है, इसका अर्थ है कि उसमें ईमानदारी का गुण बहुत अच्छे ढंग से विकसित होता है। जो व्यक्ति झूठ नहीं बोलता, कपट और चोरी नहीं करता, उसमें ईमानदारी की दृष्टि से गहरी पवित्रता आ सकती है।

ईमानदारी का मार्ग कुछ कठिन भी हो सकता है। रास्ता कष्टप्रद और ऊबड़-खाबड़ हो सकता है, परंतु उसकी मंजिल बहुत अच्छी होती है।

व्यक्ति को थोड़ी कठिनाई भले ही हो जाए, पर ईमानदारी के पथ को नहीं छोड़ना चाहिए। कोई रास्ता भले ही अच्छा हो, पर यदि उसकी मंजिल अच्छी नहीं है तो ऐसे रास्ते पर चलने का कोई लाभ नहीं है।

जो व्यक्ति झूठ बोलने वाला होता है, उस पर से लोगों का भरोसा उठ जाता है। ईमानदारी और सच्चाई की राह पर चलने वाले व्यक्ति पर लोगों का विश्वास

दृढ़ हो जाता है। हमें मनुष्य जीवन मिला है और जीवन बहुत छोटा है। अतः इस जीवन में हमें मोक्ष की ओर गति करने की साधना करने का प्रयास करना चाहिए। चार गतियाँ—नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देवगति—में मनुष्य गति ही ऐसी है जिससे जीव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। अन्य किसी भी योनि से मोक्ष-प्राप्ति संभव नहीं है। इसलिए चौरासी लाख जीव योनियों में मनुष्य जन्म प्राप्त होना दुर्लभ है।

इस मनुष्य जीवन का व्यक्ति को पूर्ण लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। अन्य गतियों में कोई भी जा सकता है, परंतु मोक्ष गति में केवल मनुष्य ही जा सकता है। अतः इस मनुष्य जीवन में ईमानदारी और सच्चाई की राह पर चलने में कठिनाई हो तो भी, सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर आगे बढ़ने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

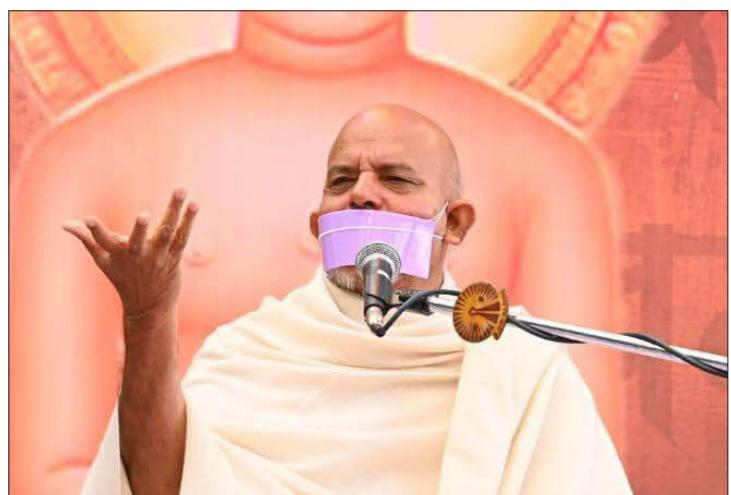
अहिंसा से उत्पन्न होती है शांति : आचार्यश्री महाश्रमण

अजमेर, राजस्थान।

07 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी आज अपनी धबल सेना के साथ अजमेर पधारे तो अजमेर वासियों ने अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। स्वागत जूलूस में न केवल तेरापंथ समाज अपितु जैनेतर समाज, इस्लाम, और ईसाई धर्म के लोग भी उत्साह के साथ उपस्थित थे। भव्य स्वागत जूलूस के साथ पूज्य प्रवर शहर में स्थित मेरवाड़ा स्टेट (कोठी) में पधारे।

मेरवाड़ा स्टेट के परिसर में बने भव्य अहिंसा समवसरण में समुपस्थित जन मेदिनी को शांति दूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम में कहा गया है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। व्यक्ति के मन में स्वयं के लिए मंगल की कामना रहती है और दूसरों के लिए भी मंगल कामना प्रेषित की जाती है। कई पदार्थों को मंगल के रूप में माना जाता



है और कहीं प्रस्थान करने अथवा किसी भी कार्य आदि को प्रारंभ करते समय भी शुभ मुहूर्त देखा जाता है। शास्त्र में बहुत ऊँची बात कही गई है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। प्रश्न हो सकता है कि कौनसा धर्म मंगल है? शास्त्र में किसी भी धर्म अथवा संप्रदाय का नाम न लेकर कहा गया कि अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है, और तप धर्म है। अहिंसा, संयम, और तप रूपी धर्म मंगल है। जो भी प्राणी अहिंसा की आराधना करेगा, उसका मंगल होगा। सब प्राणियों का कल्याण करने वाली भगवती-अहिंसा होती है।

किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देना, सब प्राणियों को अपने समान समझाना। जो व्यवहार व्यक्ति स्वयं के साथ नहीं चाहता, वह व्यवहार दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए, यह अहिंसा धर्म है। सभी प्राणियों के साथ मैत्री भाव हो, सद्ग्रावना हो। अलग-अलग जाति, सम्प्रदाय के लोग हों, अलग-अलग राजनीतिक दल के लोग हों इन भिन्नताओं को लेकर दंगा-फसाद, हिंसा, आदि नहीं होनी चाहिए, सबके प्रति सद्ग्रावना रखनी चाहिए।

इसी प्रकार व्यक्ति अपने शरीर, वाणी और मन का संयम भी धर्म है। जो भी संयम रखेगा उसका कल्याण होगा। असंयम पाप है और संयम धर्म है। अपनी वाणी से किसी को कटु शब्द बोलने का व्यर्थ प्रयास नहीं होना चाहिए। जहां तक हो सके बैरेमान, छल-कपट धोखाधड़ी के व्यवहार से बचना चाहिए। ईमानदारी भी एक बहुत अच्छा सद्गुण होता है। नैतिकता और ईमानदारी मात्र धर्म स्थान में ही नहीं कर्म स्थान में भी रखनी चाहिए। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी द्वारा चलाया गया कार्यक्रम 'अणुव्रत आन्दोलन' ऐसा कार्यक्रम है जिससे किसी भी धर्म, जाति का व्यक्ति जुड़ सकता है। इसके माध्यम से अपने जीवन को संयमित, अहिंसक,

प्रामाणिक, और व्यसन मुक्त बनाया जा सकता है। व्यक्ति के पास धन होते हुए भी खान-पान, रहन-सहन आदि में सादगी रखनी चाहिए।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि आज कई वर्षों के बाद अजमेर में आना हुआ है। अजमेर में खूब शांति रहे, धर्म की भावना जनता में भी बनी रहे, जनता में नशा मुक्तता का भाव रहे। मंगलकामना।

राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी आचार्य प्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेलंगाना प्रदेश भाजपा के संगठन मंत्री श्री चंद्रशेखरजी ने भी अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। दोनों ही राजनेताओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया। जैन सोशल ग्रुप क्लासिकल के अध्यक्ष प्रेम जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने भी गीत का संगान किया। अजमेर की बहिन-बेटियों ने गीत की प्रस्तुति दी। ऋतु सोगानी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।



आचार्य मिक्षुः जीवन दर्शन

धर्म की कसौटी

सत् और असत् सापेक्ष होते हैं। वे कसौटी पर कसे जाते हैं। तब उनका अस्तित्व प्रमाणित होता है। आचार्य मिक्षु ने एक कसौटी का निर्धारण किया, वह है अर्हत् की आज्ञा। जो आचरण अर्हत् की आज्ञा के अन्तर्गत है, वह सत् है, वह धर्म है और जो आचरण अर्हत् की आज्ञा के अन्तर्गत नहीं है, वह असत् है, अधर्म है।

इस कसौटी के आधार पर आचार्य मिक्षु ने धर्म की व्याख्या की—

त्याग धर्म है, भोग अधर्म है।

व्रत धर्म है, अव्रत अधर्म है।

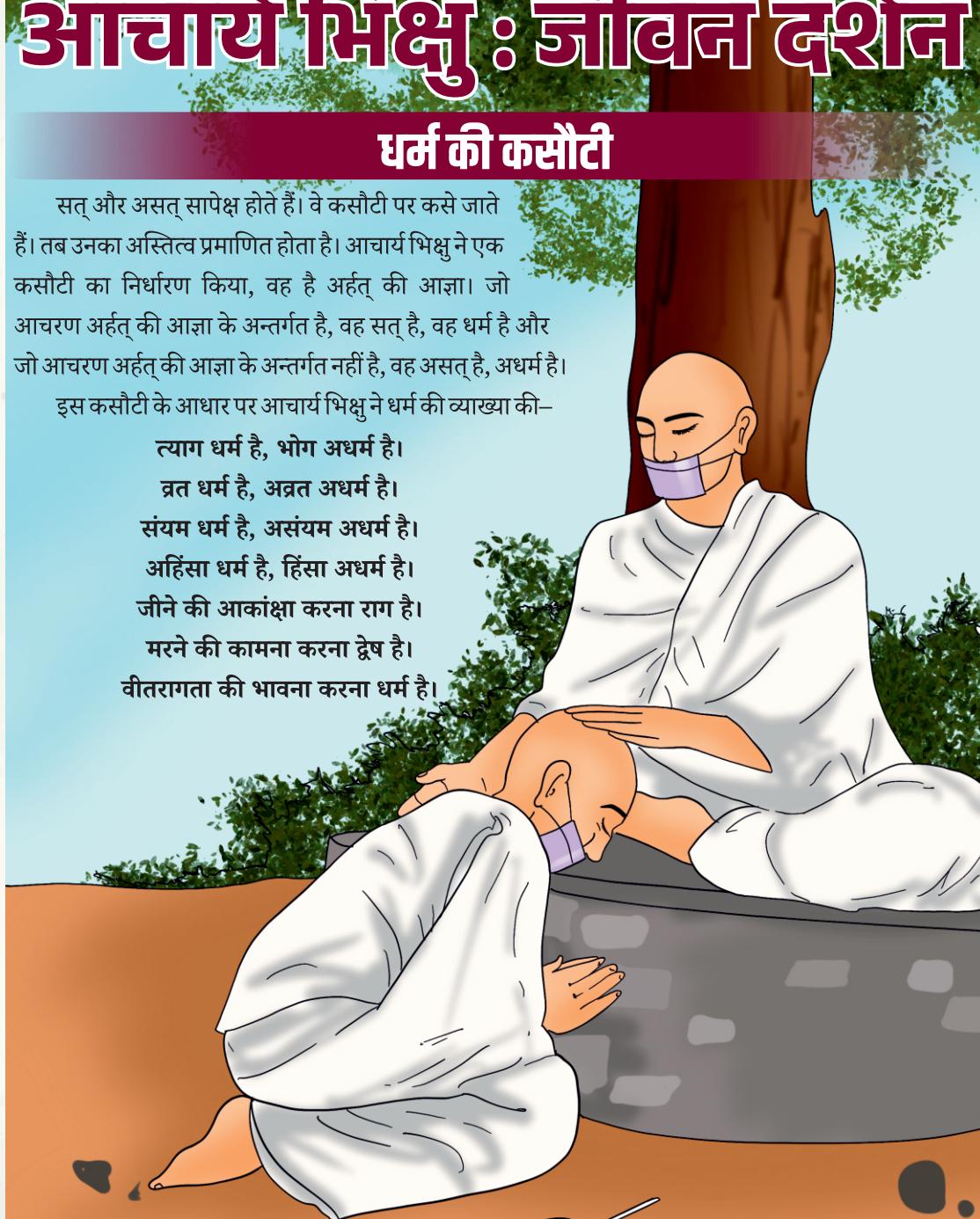
संयम धर्म है, असंयम अधर्म है।

अहिंसा धर्म है, हिंसा अधर्म है।

जीने की आकांक्षा करना राग है।

मरने की कामना करना द्वेष है।

वीतरागता की भावना करना धर्म है।



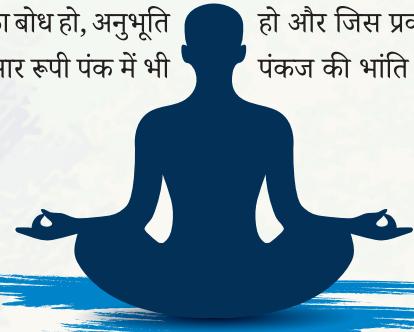
जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

ध्यान

एक बच्चा ठीक से नहीं पढ़ रहा है, एक मजदूर ठीक से काम नहीं कर रहा है। एक आदमी सामने पड़ी वस्तु देख नहीं पा रहा है। इन सबका कारण क्या है? अथवा इसका समाधान क्या हो सकता है। अगर हम गौर करें तो प्रायः एक शब्द का प्रयोग बार-बार किया जाता है वह है 'ध्यान' जैसे की 'ध्यान से पढ़ो', 'ध्यान से काम करो', 'ध्यान से देखो' आदि-आदि। यह प्रश्न स्वाभाविक है की ध्यान क्या है? ध्यान को अनेक परिभाषाओं से परिभाषित किया गया है। संस्कृत धातु रूप के अनुसार ध्यो-चिन्तायाय चिन्तन करना। एकाग्र होने का नाम ध्यान है। प्रमाद के अतिक्रमण से अप्रमाद की सीमा में आना ध्यान है। योग गन्ध के अनुसार अपने आत्म स्वरूप की अनुभूति की अवस्था को प्राप्त होना। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अनुसार 'रहे भीतर जीए बाहर' यह ध्यान है। वस्तुतः ध्यान नहीं है जिसमें 'स्व' का बोध हो, अनुभूति हो और जिस प्रकार कमल का फूल कीचड़ में रहते हुए भी निर्लेप रहता है, ठीक वैसे ही संसार रूपी पंक में भी पंकज की भाँति जो जीन रहना सीख जाते हैं वही भूमिका ध्यान बन जाती है।

साप्ताहिक प्रेरणा

ॐ अ.भी.रा.शि.को.नमः की एक माला फेरे।

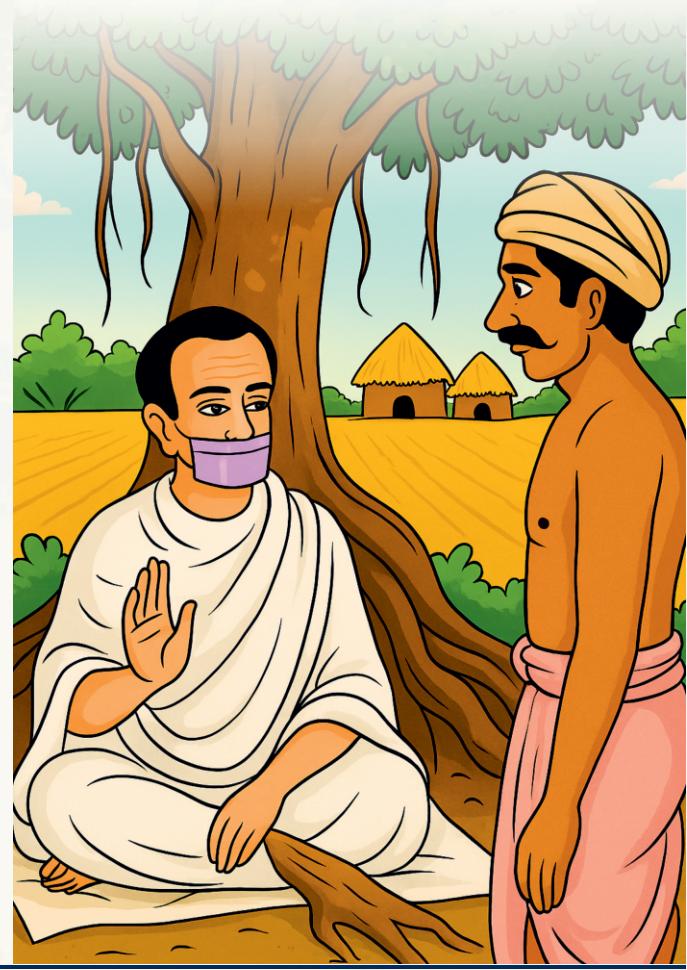


मिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

चर्चा घर के मालिक की तरह करो

कोई स्वामीजी के पास चर्चा करने आया। दानदया और व्रत-अव्रत के विषय में चर्चा करते हुए वह स्थान-स्थान पर अटकता है, अंट-संट बोलता है। न्याय-संगत एक चर्चा को छोड़ बीच में ही दूसरी शुरू कर देता है, किन्तु प्रथम न्यायसंगत चर्चा का निर्वाह नहीं करता।

तब स्वामीजी बोले— घर का मालिक फसल को काटता है तो वह व्यवस्थित रूप में क्रमबद्ध काट लेता है और यदि खेत में चोर घुस जाता है तो वह फसल को अस्त-व्यस्त रूप में काटता है— एक पौधा कहीं से तोड़ता है तथा दूसरा पौधा कहीं से तोड़ता है। इसी प्रकार तुम लोग चोर की भाँति मत करो। घर मालिक की भाँति की एक चर्चा को पार तक पहुंचा कर फिर दूसरी शुरू करो।



क्या आप जानते हैं?

पानी को फिल्टर करने की जिस प्रक्रिया में रासायनिक द्रव्यों का समुचित प्रयोग होता होता हो तो उस पानी को अचित्त माना जाए।





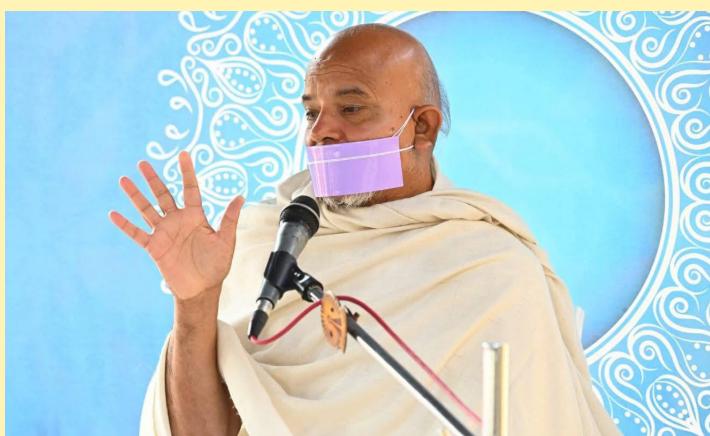
विनय, श्रुत, तपस्या व आचार रहे तो जीवन में शांति आए : आचार्यश्री महाश्रमण

गगवाना।

08 जनवरी 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, तीर्थकर के प्रतिनिधि, अखंड परिवाजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज प्रातः काल अजमेर से गतिमान हुए और लगभग 13 किमी, का विहार सुसंपन्न कर गगवाना में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पथारे।

विद्यालय परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वांगमय पर आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दशवेआलियं आगम में चार प्रकार की समाधि और चार आचार समाधि। व्यक्ति की यह कामना रहती है कि जीवन शांति में बीते। तकलीफ न आए और मानसिक उलझनें भी न आए। जिंदगी में रोटी-पानी, कपड़ा, और मकान की चिंता रहती है और इनके पूरा होने के बाद गहने-आभूषण, आदि के प्राप्त होने की चिंता हो सकती है। यद्यपि व्यक्ति को चिंतन करना चाहिए।



आती है तो उसके समाधान का गास्ता खोजने का प्रयास करना चाहिए। परन्तु दुःखी नहीं बनना चाहिए।

जीवन में शांति और समाधि का एक उपाय है कि जीवन में विनयशीलता रखें। उद्घट्ता, अहंकार, क्रोध, लडाई-झगड़ा नहीं करना चाहिए। समाधि का दूसरा उपाय है - श्रुत आराधना। ज्ञान की आराधना करना, स्वाध्याय करना। ज्ञान और श्रुत के मिलने से व्यक्ति का चिंतन प्रशस्त बनता है। नकारात्मक चिंतन से व्यक्ति दुःखी भी बन सकता है, सकारात्मक चिंतन से व्यक्ति को सुख और शांति की प्राप्ति हो सकती है।

शांति प्राप्त करने का तीसरा उपाय है

- तपस्या। तपस्या करने से भी शांति और समाधि मिल सकती है। तपस्या करने से कई बार बीमारी भी ठीक हो जाती है और तपस्या में मन लगने से आध्यात्मिक शांति, मानसिक समाधि भी मिल सकती है। चौथा उपाय है- आचार। अपने आचरणों को अच्छा रखें। सदाचार के पथ पर चलने से भी शांति रह सकती है।

अतः जीवन में विनय, श्रुत, तपस्या व आचार रहे तो जीवन शांति और समाधि मय बन सकता है। मंगल प्रवचन कार्यक्रम के दौरान समाज सेवी बिलाल खान, सरपंच गुलनाज खानम्, विद्यालय की प्रधानाचार्या वंदना वालिया ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

अहंम्
साध्वीश्री मनुयशा जी
का देवलोकगमन



जीवन परिचय

संसारिक नाम	मंजु
जाति	भलावत
पिता	श्री मदनलाल जी भलावत
माता	श्रीमति प्यारी बाई
जन्म	लालूपुरा, भाद्रव कृष्णा ग्यारस वि.सं. 2024
दीक्षा तिथि	31 अगस्त 1967
दीक्षा प्रदाता	माघ शुक्ला पंचमी वि.सं. 2052
स्थान	लाडनूं
दीक्षा क्रमांक	24 जनवरी 1996
यात्रा	आचार्य श्री महाप्रज्ञ
देवलोकगमन	राजस्थान, नेपाल, बिहार, बंगाल, आसाम, भूटान सिक्किम, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश
	13 जनवरी 2026, पश्चिम रात्रि 3:27 बजे, शान्ति निकेतन सेवा केंद्र, गंगाशहर

आचार्यश्री महाश्रमणजी : वित्रमय झलकियाँ

